पल्टू साहिब की बानी

भाग तीसरा

—: ० :—

जिसमें
उनके मनोहर शब्द और साखी
टिप्पणी सहित
छपी हैं

—: * :—

प्रकाशक
बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद

आठवीं बार] १६७६ [मूल्य ३) रुपये

Printed at The Belvedere Printing Works Allahabad, By Sheel Mohan.

प्रस्तावना

सन् १९०७ ई० में हमने एक लिपि से पलटू साहिब की कुंडलियाँ थोड़े से अरिल छंद इत्यादि के साथ छापी थीं और फिर कुछ रेख्ते, झूलने और भजन मिले जिन्हें एक छोटी सी पुस्तक के रूप में सन् १९०८ में छापा परन्तु इन पदों की दूसरी लिपि न मिलने के कारण उनके मुकाबला और भली भाँति जाँच करने का मौका न मिला, अपनी अल्प बुद्धि अनुसार दो पलटूपंथी साधुओं से जहाँ तहाँ पूछ कर छाप दिया। हाल में बाबा सरजूदास जी पलटूपंथी, पुराना कोपा, जिला आजमगढ़ के महंत से भेंट हुई और इन परोपकारी महात्मा ने कृपा करके हमको अपनी हस्त-लिखित पुस्तक पलटू साहिब की बानी दी जिससे मिलान करके त्रुटियाँ जो पहिले छापे में रह गई थीं ठीक की गईं और बहुत सी नई मनोहर कुंडलियाँ रेख्ते, झूलने, अरिल छंद, कबित्त सवैये और भजन के पद चुनने का भी अवसर मिला। यह सब पहिले छपे हुए पदों के साथ नये सिर से तीन भागों में इस क्रम से छापे जाते हैं :—

भाग १—कुंडलियाँ।

भाग २—रेख्ता, झूलना, अरिल कबित्त और सवैया।

भाग ३—रागों के शब्द या भजन और साखियाँ जो ठाकुर गंगाबख्श सिंह, जमींदार, मौज़ा टँडवा जिला फैजाबाद ने कृपा करके भेजीं।

इस सहायता के लिए हम महन्त सरजूदासजी का मुख्य कर और ठाकुर गंगाबख्शसिंहजी को धन्यवाद हृदय से देते हैं। महन्तों में हमको आज तक ऐसे कोई नहीं मिले थे जिन्होंने आप अपने पंथ के प्रचारक महात्मा का ग्रन्थ स्वच्छ परोपकार के निमित्त बड़े उत्साह से छापने को दिया हो।

अधम
एडिटर संतबानी-पुस्तक-माला।

इलाहाबाद
सन् १९२७

जीवन-चरित्र

महात्मा पलटूदासजी (पलटू साहिब) के जीवन-चरित्र के हम बहुत दिन से खोज में हैं। परन्तु कहीं से पूरा हाल आज तक नहीं मिला यद्यपि कितने ही ग्रन्थ देखे गये और देश-देशान्तर के साधुओं, विद्वानों और निज पलटूपंथी महन्तों से दरियाफ्त किया गया। पलटूदास जी के सगे भाई और परम भक्त पलटूप्रसाद ने (जिनका संसारी नाम कुछ और ही था) अपनी "भजनावली" नामक पुस्तक में थोड़ा सा हाल लिखा है जिससे निश्चय होता है कि पलटू साहिब ने नगपुरजलालपुर गाँव में एक काँदू बनिया के कुल में जन्म लिया जिसे "भजनावली" में नंगाजलालपुर के नाम से लिखा हैं। यह गाँव फैजाबाद के जिले में आजमगढ़ की पच्छिम सीमा से मिला हुआ है नंगाजलालपुर नाम का कोई गाँव आजमगढ़ या फैजाबाद के जिले में नहीं है। यहीं उनके पुरोहित गोबिंदजी महाराज रहते थे और दोनों ने बाबा जानकीदास नामक साधू से उपदेश लिया था, पर उनकी शांति नहीं हुई इसलिए सार वस्तु की खोज में दोनों निकले। गोबिंदजी जगन्नाथपुरी को जाते थे कि रास्ते में भीखा साहिब के दर्शन मिले जिनसे गुप्त भेद प्राप्त हुआ। तब गोबिंदजी पलटू साहिब के पास लौट कर आये और पलटू साहिब ने इनसे सार वस्तु का उपदेश लेकर उन्हें गुरू धारन किया।

भजनावली के तीन दोहे यहाँ लिखे जाते हैं :—

नंगाजलालपुर जन्म भयो हैं, बसे अवध के खोर।
कहँ पलटूपरसाद हो, भयो जक्त में सोर।।
चार बरन को मेटि के, भक्ति चलाई मूल।
गुरु गोबिंद के बाग में, पलटू फूले फूल।।
सहर जलालपुर मूड़ मुड़ाया, अवध तुड़ा करधनियाँ।
सहज करैं व्योपार घट में, पलटू निर्गुन बनियाँ।।

पलटू साहिब उन्नीसवें शतक विक्रमीय में वर्त्तमान थे—अवध के नौवाव शुजाउद्दौला और हिन्दुस्तान के बादशाह शाह आलम इनके समकालीन थे जिनको हुए डेढ़ सौ बरस का ज़माना बीता। यह महात्मा सदा गृहस्थ आश्रम में रहे और इनके वंश के लोग अब तक नगपुरजलालपुर के गाँव में मौजूद हैं।

पलटू साहिब बहुत काल तक फैजाबाद के अयोध्या नगर में विराजमान थे जहाँ उन्होंने अपना सतसंग खड़ा किया और अपने उपदेश से अनेक जीयों को चिताया। इसी स्थान पर उन्होंने शरीर त्याग किया और वहाँ उनकी समाधि और संगत अब तक मौजूद हैं। और जगहों में भी इन महात्मा के अनुयायियों की संगत है और पलटूपंथी साधु और गृहस्थ तो थोड़े-बहुत भारतवर्ष के हर विभाग में पाये जाते हैं।

पलटू साहिब की प्रचण्ड महिमा और कीर्ति को देखकर अयोध्या और आस-पास के अखाड़ों के बैरागियों के चित्त में बड़ी जलन और ईर्षा पैदा हुई जिसका इशारा पलटू साहिब ने अपनी बानी में भी जगह-जगह पर किया है। कहते हैं कि यह ईर्षा इतनी बढ़ी कि इन दुष्टों ने गुट करके पलटू साहिब को जीते जी जला दिया परन्तु उसी समय और उसी देंह से वह फिर जगन्नाथपुरी में प्रकट हुए और तत्काल ही फिर गुप्त हो गये। इसके प्रमाण में यह साखी दी हुई हैं :—

अवधपुरी में जरि मुए दुष्टन दिया जराय।
जगन्नाथ की गोद में पलटू सूते जाय।।

इसके बहुत से चमत्कार और मोजजे मुर्दों के जिलाने इत्यादि के प्रसिद्ध हैं जिनके यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं है।

इलाहाबाद
सितम्बर १९१५

अधम
एडिटर संतबानी-पुस्तकमाला।

विषय-सूची

प्रेमी पाठकों से अनुरोध है कि यदि पलटू साहब की असली फोटू मेरे पास भेज सकें या पता बतला सकें जहाँ प्राप्त हो सके तो मैं बड़ा आभारी हूँगा।

—सम्पादक

पलटू साहिब भाग ३

शब्द

॥ गुरुदेव ॥

(१)

गगन कि धुनि जो आनई, सोई गुरु मेरा ।
वह मेरा सिरताज है, मैं वा का चेरा ॥ टेक ॥
सुन में नगर बसावई, सूतत में जागै ।
जल में अगिन छपावई, संग्रह में त्यागै ॥ १ ॥
जंत्र बिना जन्त्री बजे, रसना बिनु गावै ।
सोहं सबद अलापि कै, मन को समुझावै ॥ २ ॥
सुरति डोर अमृत भरै, जहँ कूप उरधमुख ।
उलटै कमल हिं गगन में, तब मिलै परम सुख ॥ ३ ॥
भजन अखंडित लागई, जस तेल कि धारा ।
पलटुदास दंडौत करि, तेहि बारम्बारा ॥ ४ ॥

(२)

बूझि बिचारि गुरु कीजिये, जो कर्म से न्यारा ।
कर्म-बन्ध हरि दूरि है, बूड़हु मँझधारा ॥ टेक ॥
काम क्रोध जिनके नहीं, नहिं भूख पियासा ।
लोभ मोह एकौ नहीं, नहिं जग की आसा ॥ १ ॥
ज्यों कंचन त्यो काँच है, अस्तुति सो निन्दा ।
सत्रु मित्र दोउ एक हैं, मुरदा नहिं जिन्दा ॥ २ ॥
जोग भोग जिनके नहीं, नहिं संग्रह त्यागी ।
बन्द मोष एकौ नहीं, सत सबद के दागी ॥ ३ ॥
पाप पुन्य जिनके नहीं, नहिं गरमी पाला ।
पलटू जीवन-मुक्त ते, साहिब के लाला ॥ ४ ॥

(३)

गुरु दरियाव नहाया है, ता की दुरमति भागी ॥ टेक ॥
गुरु दरियाव सदा जल निरमल, पैठत उपजै ज्ञाना है ॥१॥
अरसठ तीरथ गुरु के चरनन, स्री मुख आपु बखाना है ॥२॥
जब लग गुरु दरियाव न पावै, तब लग फिरै भुलाना है ॥३॥
पलटुदास हम बैठि नहाने, मिटिगा आना जाना है ॥४॥

(४)

चादर लेहु धुवाइ है, मन मैल भया है ॥ टेक ॥
सतगुरु पूरा धोबी पाया, सतसंगति सौंदाई है ॥१॥
तिरगुन दाग पर्‌यो चादर में, मलि मलि दाग छुड़ाई है ॥२॥
आँच दिहिन बैराग कि भाठी, सरवन मनन घमाई[1] है ॥३॥
निरखि परखि कै चादर धोइनि, साबुन ज्ञान लगाई है ॥४॥
पलटूदास ओढ़ि चलु चादर, बहुरि न भवजल आई है ॥५॥

(५)

सकल तजि गुरु ही से ध्यान लगैहौं ॥ टेक ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस न पुजिहौं, ना मूरत चित लैहौं ।
जो प्यारा मोरे घट माँ बसतु है, वाही को माथ नवैहौं ॥१॥
ना कासी में करवत लैहौं, ना पचकोस में जैहौं ।
प्राग जाय तीरथ नहिं करिहौं, जगर न सीस कटैहौं ॥२॥
अजपा और अनाहू साधो, त्रिकुटी ध्यान न लैहौं ।
पदम आसन खींच न बैठौं, अनहद नाहिं बजैहौं ॥३॥
सबही जाप छोड़ि के साधो, गुरु का सुमिरन लैहौं ।
गुरु मूरत हिरदय में छाई, वाही से ध्यान लगैहौं ॥४॥
दुई खुदी हस्ती जब मेटे, निरंकार कहलैहौं ।
गगन भूमि में राज हमारो, अनलहक[2] धूम मचैहौं ॥५॥

(१) घाम या धूप में फैलाना । (२) अहंब्रह्म ।

पलटूदास प्रेम की बाजी, गुरु ही से दाँव लगैहौं ।
जीतौं तो मैं गुरु को पावौं, हारौं तो उनकी कहैहौं ॥६॥

॥ घट मठ ॥

(६)

साहिब आप बिराजै सकल घट, चारि खानि बिच राजै ॥टेक॥
नारी पुरुष देव औ दानव, बाग फूल औ माली ।
हाथी घोड़ा बैल ऊँट में, कतहूँ रहै न खाली ॥१॥
मच्छ कच्छ घरियार अचर चर, आग पवन औ पानी ।
तीतर बाज सिंह औ हरिना, पूरन चारिउ खानी ॥२॥
ज्ञानी मूढ़ गुरू औ चेला, चोर साहु भरभूना[१] ।
बिस्वा बिसनी[२] भेड़ कसाई, नाहिं कोई घर सूना ॥३॥
यह सरीर नासक[३] है भाई, जीव कै नास न होई ।
पलटूदास जगत सब भूला, भेद न जानै कोई ॥४॥

(७)

तो में है तेरा राम बैरागिन, भूलि गया तोहि धाम ॥टेक॥
घिव ज्यों रहै दूध के भीतर, मथे बिनु कैसे पावै ।
फूल मँहै ज्यों बास रहतु है, जतन सेती अलगावै ॥१॥
मिंहदी मँहै रहै ज्यों लाली, काठ में अगिन छिपानी ।
खोदे बिना नहीं कोइ पावै, ज्यों धरती में पानी ॥२॥
ऊख मँहै ज्यों कंद रहतु है, पेड़ रहै फल माहीं ।
देस देसंतर ढुँढ़त फिरतु है, घट की सुधि है नाहीं ॥३॥
पूरन ब्रह्म रहै तोही में, क्यों तू फिरै उदासी ।
पलटूदास उलटि कै ताकै, तू ही है अबिनासी ॥४॥

(८)

क्यों तू फिरै भुलानी जोगिनि, पिय को मरम न जानी ॥टेक॥
अपने पिय को खोजन निकरी, है तू चतुर सयानी ।
कंठ में माला खोजै बाहर, अजहूँ लै पहिचानी ॥ १ ॥

(१) भड़भूँजा । (२) ऐयाश, बिषई । (३) नाशमान ।

मृग की नाभि मँहै कस्तूरी, वा को बास बसानी ।
खोजत फिरै नहीं वह पावै, होस न करै अपानी ॥ २ ॥
लरिका रहै बगल में तेरे, सहर ढोल दै छानी[1] ।
खसम रहै पलना पर सूता, पिय पिय करै दिवानी ॥ ३ ॥
साचा सतगुरु खोजु जाय तू, दयावंत सत-ज्ञानी ।
पलटूदास पिया पावैगी, लेहु बचन को मानी ॥ ४ ॥

(९)

ऐसी कुदरति तेरी साहिब, ऐसी कुदरति तेरी है ॥ टेक ॥
धरती नभ दुइ भीत उठाया, तिस में घर इक छाया है ।
तिस घर भीतर हाट लगाया, लोग तमासे आया है ॥ १ ॥
तीन लोक फुलवारी तेरी, फूलि रही बिनु माली है ।
घट घट बैठा आपै सींचै, तिल भर कहीं न खाली है ॥ २ ॥
चारि खानि औ भुवन चतुरदस, लख चौरासी बासा है ।
आलम तोहि तोहि में आलम, ऐसा अजब तमासा है ॥ ३ ॥
नटवा होइ के बाजी लाया, आपुइ देखनहारा है ।
पलटूदास कहौं मैं का से, ऐसा यार हमारा है ॥ ४ ॥

॥ सर्व-व्यापक ॥

(१०)

जगन्नाथ जगदीस, जग में ब्यापि रहा ॥ टेक ॥
चारि खानि में लख चौरासी, और न कोई दूजा ।
आपुइ ठाकुर आपुइ सेवक, करत आपनी पूजा ॥ १ ॥
आपुइ दाता आपुइ मँगता, आपुइ जोगी भोगी ।
आपुइ बिस्वा[2] आपुइ बिसनी[3], आपु बैद आप रोगी ॥ २ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस आपुई, सुर नर मुनि होइ आया ।
आपुहि ब्रह्म निरूपम गावै, आपुहि प्रेरत माया ॥ ३ ॥
आपुइ कारन आपुइ कारज, बिस्वरूप[4] दरसाया ।
पलटूदास दृष्टि तब आवै, संत करै जब दाया ॥ ४ ॥

(१) नगर भर घूम कर ढिंढोरा पीट रही है । (२) कसबी । (३) भोगी । (४) संसार ।

(११)

साहिब तुम सब के वाली, तेरे बिनु कहूँ न खाली ॥ टेक ॥
सब घट तेरा नूर बिराजै, कहूँ चमन कहुँ गुल कहुँ माली ॥१॥
पलटू साहिब जुदा नहीं है, मिंहदी के पात छिपी ज्यों लाली ॥२॥

(१२)

जै जै जै गुरु गोबिन्द[1] आरती तुम्हारी।
निरखत पद कंज कमल, कोटि पतित तारी ॥ टेक ॥
कोटि भानु उदै जा के, दीपक के बारी।
छीर है समुद्र जा के, चरन का पखारी[2] ॥ १ ॥
लख चौरासी तीनि लोक, जा की फुलवारी।
पुहुप लै कै का चढावों, भँवर कै जुठारी ॥ २ ॥
बाल भोग कहा दीजै, द्वारे पदारथ चारी।
कुबेरजी भंडारी जा के, देबी पनिहारी ॥ ३ ॥
सुन्न सिखर भवन जा के, तुरिया असवारी।
आठ पहर बाजा बजै, सबद की झनकारी ॥ ४ ॥
काम क्रोध लोभ मोह, सतगुरु धै मारी।
पलटुदास देखि लिया, तन मन धन वारी[3] ॥ ५ ॥

(१३)

आरती कीजै संत चरन की, यही उपाय न आन तरन की ॥टेक॥
संत को जस हरि स्त्री मुख गावै, संत कि रज ब्रह्मा नहिं पावै ॥१॥
संत चरन बैकुंठ है लोचत, संत चरन को तीरथ सोचत ॥२॥
संत राम से अंतर नाहीं, इक रस देखत दुऊ माहीं ॥३॥
लछमी है संतन की दासी, रज[4] चाहत कैलास के बासी ॥४॥
कोटि मुक्ति संतन की चेरी, पलटूदास मूल हम हेरी ॥५॥

(१४)

आरति राम गरीब-निवाजा, तीनि लोक सब के सिरताजा ॥टेक॥
तुम्हरो पतित-पावनो बाना, मैं तो पतित आपु सो जाना ॥१॥

(१) पलटू साहिब के गुरु का नाम। (२) धोवन। (३) न्योछावर। (४) चरन धूर।

नाम तुम्हारो अधम-उधारा, सब अधमन को मैं सिरदारा ॥२॥
नाम तुम्हारो दीन दयाला, इहै जानि मैं लीन्हा माला ॥३॥
सुनेउ अनाथन के तुम नाथा, यह सुनि आइ पसारेउ हाथा ॥४॥
नाँव तुम्हारो अंतरजामी, पलटुदास क्या कहै अपानी ॥५॥

॥ शब्द ॥

(१५)

अरे मोरे सबद बिबेकी हंसा हो, बैठो सबद की डार ॥ टेक ॥
सबदै ओढ़ौ सबद बिछाओ, सबदै भूख अहार ।
निसि दिन रहो सबद के घर में, सबदै गुरू हमार ॥ १ ॥
लै हथियार सबद कै मारो, सबद खेत ठहराओ ।
कबहुँ कुचाल जो होइ तुम्हारी, सबद में भागि लुकाओ ॥ २ ॥
आदि अनादि सबद है भाई, सबदै मूल बिचारा ।
जिनके चोट सबद की लागी, आवागवन निवारा ॥ ३ ॥
सबदै मूल है सबदै साखा, सबदै सबद समाना ।
पलटूदास जो सबद बिबेकी, सबद के हाथ बिकाना ॥ ४ ॥

(१६)

मुए सोई जीवते भाई, जिन्ह लगी सबद की चोट ॥ टेक ॥
उनको काऊ कुछ कहै, उन तजी है जक्त की लाज ।
वो सहज परायन होइ गये, उन सुफल किहा सब काज ॥ १ ॥
उनको और न भावई, इक भावत है सतसंग ।
वो लोहा से कंचन भये, लगि पारस के परसंग ॥ २ ॥
जिन्ह ने सबद बिचारिया, तिन्ह तुच्छ लगै संसार ।
वो आय पड़े सतसंग में, सब डारि दिहा सिर भार ॥ ३ ॥
सबद छुड़ावै राज को, फिरि सबदै करै फकीर ।
पलटुदास वो ना जियैं, जिन्ह लगा सबद का तीर ॥ ४ ॥

॥ संत और साध ॥

(१७)

धन जननी जिन जाया है, सुत संत सखी री ॥ १ ॥
तन मन धन उन पै लै दीजे, सत्तनाम जिन पाया है ॥ २ ॥
माया जा के निकट न आवै, तिरगुन दूर बहाया है ॥ ३ ॥
कंचन काच औ सत्रु मित्र को, भेद नहीं बिलगाया है ॥ ४ ॥
सहज समाधि अखंडित जा की, जग मिथ्या ठहराया है ॥ ५ ॥
पलटूदास सोई सुतवंती, संत को गोद खिलाया है ॥ ६ ॥

(१८)

संत सिपाही बाँके अवधू, फिरि पाछे नहिं ताके ॥ टेक ॥
दिन दिन परै कदम आगे को, करैं मुलुक में साके[1] ।
हाँक देत हैं रन के ऊपर, रहैं प्रेम रस छाके ॥ १ ॥
कच्चा छीर नहीं वे पीवैं, पक्का छीर पिवैं वे मा के ।
आलम[2] डेरा देखि के उनको, छोड़ैं सबद धड़ाके ॥ २ ॥
उन को भूख पियास न लागै, ज्यों खाये त्यों फाके ।
अस्तुति निन्दा दुष्ट मित्र को, एक राह में हाँके ॥ ३ ॥
काम क्रोध की गर्दन मारैं, दिल के बहुत फराखे[3] ।
पलटूदास फरक आलम से, वे असनाव[4] हैं का के ॥ ४ ॥

(१९)

दिल को करहु फराख[5] फकीरा, रहु मुहासबे[6] पाक ॥ टेक ॥
जो आवै सो देहु लुटाई, क्या कौड़ी क्या लाख ।
खाहु खियावहु मगन रहौ तुम, सबसे रहु बेबाक[7] ॥ १ ॥
औरत जो दरसन को आवै, नजर से ताकहु पाक ।
सोना रूपा लाल जवाहिर, तुम्हरे लेखे खाक ॥ २ ॥
माया को चिरकीन[8] लखौ तुम, देखि कै मूँदौ नाक ।
जब आवै तब देहु चलाई, तनिक न रहियो ताक ॥ ३ ॥

(१) अपना सम्बत या सन चलाना जो भारी कीर्त्ति का निशान है। (२) सृष्टि। (३) उदार। (४) दोस्त, यार। (५) उदार। (६) हिसाब किताब से। (७) लेखा ड्योढ़ा। (८) गंदगी।

संत चकोर को संग्रह नाहीं, संग्रह करै हलाक।
पलटूदास कहौं मैं सब से, बार बार दै हाँक ॥ ४ ॥

॥ सतसंग ॥

(२०)

संतन संग अनन्द परम सुख ॥ टेक ॥
जेकरी संगति ज्ञान होत है, मिटत सकल दुख द्वन्द।
उनके निकट काल नहिं आवै, टूटि जात जम फंद ॥ १ ॥
फूल संग से तेल बखानो[1], सब कोइ करत पसंद।
पारस छुए लोह भा कंचन, दुरमति सकल हरंद[2] ॥ २ ॥
हेलुवाई ज्यों अवटि जारि कै, करत खाँड़ से कंद।
पलटुदास यह बिनती मोरी, अजहुँ चेत मतिमंद ॥ ३ ॥

(२१)

चतुरन से हम दूरि, कहत ऊधो से स्त्री मुख ॥ टेक ॥
तीरथ बरत जोग जप तप में, मो से न भेंट सहै कितनौ दुख।
ज्ञान कथै बहु भेष बनावै, इहौ बात सब तुक्ख[3] ॥१॥
नेम अचार करै कोउ कितनौ, कबि कोबिद सब खुक्ख[4]।
तिरदंडी सरबंगी नागा, मरै पियास औ भुक्ख[5] ॥२॥
तजि पाखंड करै सतसंगति, जहाँ भजन में सुक्ख।
पलटुदास हरि कहि ऊधो से, सतसंगति में सुक्ख ॥३॥

(२२)

जिन पाया तिन पाया है, सतसंग सखी री ॥ टेक ॥
तीरथ बरत करै कोउ कितनौं, नाहक जनम गँवाया है ॥१॥
जप तप जज्ञ करै कोउ कितनौं, फिरि फिरि गोता खाया है ॥२॥
बेद पढ़ी पढ़ि पंडित मरिगा, फिरि चौरासी आया है ॥३॥
पलटूदास बात है सहजी, संतन भेद बताया है ॥४॥

---

(१) महिमा हुई। (२) हर गई या दूर हुई। (३) तुच्छ। (४) थोथा। (५) भूख।

॥ चितावनी ॥

(२३)

कहवाँ से जिव आये कहवाँ समाने हो साधो ।
का देखि रहेउ भुलाय कहाँ लिपटाने हो साधो ॥ १ ॥
निर्गुन से जिव आये सर्गुन समाने हो साधो ।
भूलि गये हरि नाम माया लिपटाने हो साधो ॥ २ ॥
जैसे तुरकी घोड़ खैंचि लट बागा हो साधो ।
ऊच सीस भये नीच चुगन लागे कागा हो साधो ॥ ३ ॥
आठ काठ कै पिंजरा दस दरवाजा हो साधो ।
कौनिक निकसा प्रान कौन दिसि भागा हो साधो ॥ ४ ॥
रोवत घर की नारि केस लट खोले हो साधो ।
आज मँदिर भयो सून कहाँ गये राजा हो साधो ॥ ५ ॥
आलहि[1] बाँस कटाइन डँडिया फँदाइन हो साधो ।
पाँच पचीस बराती लेइ सब धाये हो साधो ॥ ६ ॥
तीरे दिहिन उतारि सकल नहवावैं हो साधो ।
करि सोरहो सिंगार सबै जुरि आये हो साधो ॥ ७ ॥
आलहि चँदन कटाइन घेरि घर छाइन हो साधो ।
लोग कुटुम परिवार दिहिन पहुड़ाई[2] हो साधो ॥ ८ ॥
लाइ दिहिन मुख आगि काठ करि भारा हो साधो ।
पुत्र लिये कर बाँस सीस गहि मारा हो साधो ॥ ९ ॥
चहुँ दिसि पवन झकोरै तरवर डोलै हो साधो ।
सूझत वार न पार कौन दिसि जाना हो साधो ॥१०॥
हियवाँ नहिं कोइ आपन जे से मैं बोलों हो साधो ।
जस पुरइनि[3] कर पात अकेला मैं डोलों हो साधो ॥११॥
बिष बोयों संसार अमृत कैसे पावों हो साधो ।
पुरब जनम कर पाप दोस केहि लावों हो साधो ॥१२॥

(१) जल्दी । (२) लिटाया । (३) कोईं ।

भौसागर की नदिया पार कैसे पावों हो साधो ।
गुरु बैठे मुख मोड़ि मैं केहि गोहरावों हो साधो ॥१३॥
जेहि बैरिन कर मूल ताहि हित मान्यो हो साधो ।
पलटुदास गुरु ज्ञान सुनत अलगान्यो हो साधो ॥१४॥

(२४)

लादि चला बंजारा है, कोउ संग न साथी ॥ टेक॥
जाति कुटुम सब रुदन[1] करत है, फेरि बैठि मुख दारा[2] है ॥ १ ॥
छुटिगै बरदी लुटिगै टाँडा, निकरि गया वह प्यारा है ॥ २ ॥
बैठे काग सून भा मंदिल, कोई नहीं रखवारा है ॥ ३ ॥
पलटूदास तजो मृगतृस्ना, झूठा सकल पसारा है ॥ ४ ॥

(२५)

भजि लीजै हरि नाम, काम सकल तजि दीजै ॥ टेक॥
मातु पिता सुत नारि बांधवा, आवै ना कोउ कामा ।
हाथी घोड़ा मुलुक खजाना, छुटि जैहैं धन धामा ॥ १ ॥
जब तुम आया मूठी बाँधे, हाथ पसारे जाना ।
सूखा हाथ जगत की माया, ताहि देखि ललचाना ॥ २ ॥
नर तन सुभग भजन के लायक, कौड़ी हाट बिकाना ।
हरिगा ज्ञान परा कूसंगति, अमृत में बिष साना ॥ ३ ॥
एक न भूला दुइ ना भूला, भूला सब संसारा ।
पलटुदास हम कहा पुकारी, अब ना दोस हमारा ॥ ४ ॥

(२६)

बृद्ध भये तन खासा, अब कब भजन करहुगे ॥ टेक॥
बालापन बालक सँग बीता, तरुन भये अभिमाना ।
नख सिख सेती भई सपेदी, हरि का मरम न जाना ॥ १ ॥
तिरिमिरि बहिर नासिका चूवै, साक[3] गरे चढ़ि आई ।
सुत दारा गरियावन लागे, यह बुढ़वा मरि जाई ॥ २ ॥

---

(१) बिलाप । (२) स्त्री । (३) दमा ।

तीरथ बर्त एकौ नहिं कीन्हा, नहीं साधु की सेवा।
तीनिउ पन धोखे में बीते, ऐसे मूरुख देवा ॥ ३ ॥
पकश आइ काल ने चोटी, सिर धुनि धुनि पछिताता।
पलटूदास कोऊ नहिं संगी, जम के हाथ बिकाता ॥ ४ ॥

(२७)

भजन करु मूरख कहँ भटकै रे ॥ टेक ॥
यह संसार माया कै लासा, छुटै नाहिं जो सिर पटकै रे ॥ १ ॥
माया मोह रैन का सपना, झूठे माहिं कहा अटकै रे ॥ २ ॥
भरा घट घड़ा हरि नाम अमी है, जग चहला में लपटै रे ॥ ३ ॥
मिलु सतगुरु तोहि नाम पिलावै, जावै तपनि जुगन जुग कै रे ॥ ४ ॥
नहिं डेरात जम बाँधि के ठगिहैं, ऊपर गोड़ नरक लटकै रे ॥ ५ ॥

(२८)

पाती आई मोरे पीतम की, साईं तुरत बुलायो हो ॥ टेक ॥
इक अँधियारी कोठरी, दूजे दिया न बाती।
बाँह पकरि जम ले चले, कोइ संग न साथी ॥ १ ॥
सावन की अँधियारिया, भादों निज राती।
चौमुख पवन झकोरही, धड़कै मोरि छाती ॥ २ ॥
चलना तो हमैं जरूर है, रहना यहँ नाहीं।
का लैके मिलब हजूर से, गाँठी कछु नाहीं ॥ ३ ॥
पलटुदास जग आय के, नैनन भरि रोया।
जीवन जनम गँवाय के, आपै से खोया ॥ ४ ॥

(२९)

घरिय पहर में कूच तुम्हारा, मन तुम भयौ अनारी हो ॥ १ ॥
केहि कारन धन धाम सँवारहु, नाहक करहु बेगारी हो ॥ २ ॥
जम राजा से का तुम कहिहो, पूछै दै दै गारी हो ॥ ३ ॥
घर की नारी फेरि मुँह बैठी, बड़ी रही हितकारी हो ॥ ४ ॥
गाँठी दाम राह न पैंड़ा, बूड़ि मुए मँझधारी हो ॥ ५ ॥
पलटुदास संतन बलिहारी, हम को पार उतारी हो ॥ ६ ॥

(३०)

कै दिन का तोरा जियना रे, नर चेतु गँवार ॥ टेक ॥
काची माटि कै घैला[1] हो, फूटत नहिं बेर ।
पानी बीच बतासा हो, लागै गलत न देर ॥ १ ॥
धूआँ कौ धौरेहर हो, बारू कै भीत ।
पवन लगे झरि जैहै हो, तृन ऊपर सीत ॥ २ ॥
जस कागद कै कलई हो, पाका फल डार ।
सपने कै सुख संपति हो, ऐसो संसार ॥ ३ ॥
घने बाँस का पिंजरा हो, तेहि बिच दस द्वार ।
पंछी पवन बसेरू हो, लावै उड़त न बार ॥ ४ ॥
आतसबाजी यह तन हो, हाथे काल के आग ।
पलटुदास उड़ि जैबहु हो, जब देइहि दाग ॥ ५ ॥

(३१)

काल बली सिर ऊपर हो, तीतर काँ बाज ।
चंगुल तर चिचियैहौ हो, तब मिलि हैं मिजाज ॥ १ ॥
भजन बिना का नर तन हो, रैयत बिनु राज ।
बिना पिता का बालक हो, रोवै बिनु साज । २ ॥
देव रु पितर उपासक हो, परिहै जम गाज[2] ।
बहुत पुरुष कै नारी हो, बिस्वा नहिं लाज ॥ ३ ॥
काम क्रोध बिनु मारे हो, का दिहे सिर ताज ।
पलटुदास धृग जीवन हो, सब झूठ समाज ॥ ४ ॥

(३२)

मेरे मनुआँ रे तुम तो निपट अनारी ॥ टेक ॥
कौड़ी कौड़ी लाख बटोरेहु, नाहक किहेहु बेगारी ।
तहु चढ़ि चलेहु चारि के काँधे, दूनों हाथ पसारी ॥ १ ॥
बहुरि बहुरि कै राँध परोसी, आये मूड़ फेकारी[3] ।

(१) घड़ा । (२) बिजली । (३) सिर खोले ।

जाति कुटुँब सब रोवन लागे, सँग लागि बूढ़ि महतारी ॥ २ ॥
तुहरे संग कोऊ नहिं जाई, कोठा महल अटारी ।
अपने स्वारथ को सब रोवै, झूठ मूठ के आ री ॥ ३ ॥
धरमराय जब लेखा माँगिहै, करबेहु कौन बिचारी ।
पलटू कहत सुनो भाइ साधो, इतनी अरज हमारी ॥ ४ ॥

(३३)

पानी बीच बतासा साधो तन का यही तमासा है ॥ टेक ॥
मुट्ठी बाँधे आया बंदा, हाथ पसारे जाता है ।
ना कुछ लाया न ले जायगा, नाहक क्यों पछिताता है ॥ १ ॥
जोरू कौन खसम है किसका, कैसा तेरा नाता है ।
पड़ा बेहोस होस कर बंदे, बिषय लहर में माता है ॥ २ ॥
ज्यों ज्यों बंदे तेरी पलक परत है, त्यों त्यों दिन नगिचाता है ।
नेकी बदी तेरे संग चलेगी, और सब झूठी बाता है ॥ ३ ॥
प्रान तुम्हारे पाहुन बंदे, क्यों रिस किये कुंहाता[1] है ।
पलटूदास बंदगी चूके, बन्दा ठोकर खाता है ॥ ४ ॥

॥ बैराग ॥

(३४)

जनि कोइ होवै बैरागी हो बैराग कठिन है ॥ टेक ॥
जग की आसा करै न कबहूँ, पानी पिवै ना माँगी हो ।
भूख पियास छुटै जब निद्रा, जियत मरै तन त्यागी हो ॥ १ ॥
जा के धर पर सीस न होवै, रहै प्रेम लौ लागी हो ।
पलटुदास बैराग कठिन है, दाग दाग पर दागी हो ॥ २ ॥

॥ बिरह ॥

(३५)

जेकरे अँगने नौरँगिया, सो कैसे सोवै हो ।
लहर लहर बहु होय, सबद सुनि रोवै हो ॥ १ ॥
जेकर पिय परदेस, नींद नहिं आवै हो ।
चौंकि चौंकि उठै जागि, सेज नहिं भावै हो ॥ २ ॥

---

(१) रूठता ।

रैन दिवस मारै बान, पपीहा बोलै हो ।
पिय पिय लावै सोर, सवति होइ डोलै हो ॥ ३ ॥
बिरहिनि रहै अकेल, सो कैसे कै जीवै हो ।
जेकरे अमी कै चाह, जहर कस पीवै हो ॥ ४ ॥
अभरन देहु बहाय, बसन धै फारो हो ।
पिय बिनु कौन सिंगार, सीस दै मारो हो ॥ ५ ॥
भूख न लागै नींद, बिरह हिये करकै हो ।
माँग सेंदुर मसि पोछ[1], नैन जल ढरकै हो ॥ ६ ॥
केकहें करै सिंगार, सो काहि दिखावै हो ।
जेकर पिय परदेस, सो काहि रिझावै हो ॥ ७ ॥
रहै चरन चित लाइ, सोई धन आगर हो ।
पलटुदास कै सबद, बिरह कै सागर हो ॥ ८ ॥

(३६)

जा के लगी सोई तन जानै, दूजो कवन हाल पहिचानै ॥ टेक ॥
है कोइ भेदी भेद बतावै, कैसे बिरहिनि दिवस गँवावै ॥ १ ॥
मारग दूर पथिक सब हारे, उतरन को भवसागर पारे ॥ २ ॥
उकठा पेड़ सींचै जो माली, घायल फिरौं भई मतवाली[2] ॥ ३ ॥
एक तो लागी प्रेम की गाँसी, दूजे सहौं जक्त उपहासी ॥ ४ ॥
लागी लगन टरै नहिं टारे, क्या करै औषद बैद बेचारे ॥ ५ ॥
पलटूदास लगी तन मेरे, घायल फिरैं और बहुतेरे ॥ ६ ॥

(३७)

मेरे लगी सबद की गाँसी है, तब से मैं फिरौं उदासी है ॥ टेक ॥
नैनन नीर ढुरन मोरे लागे, परी प्रेम की फाँसी है ॥ १ ॥
भूषन बसन नहीं मोहिं भावै, छोड़ा भोग बिलासी है ॥ २ ॥

---

(१) माँग का सेंदुर और आँख का काजल दोनों पोछ डाले जायँ । (२) अगर माली जड़ से सूखे पेड़ को सींच कर हरा कर सकता हो तो मुझ घायल मतवाली की दशा भी सुधारना मुमकिन है ।

मन भया छीन दीन हुई सब से, अबला नाम पियासी है ॥ ३ ॥
चारिउ खूँट कानन गिरि[1] खोजा, खोजा मथुरा कासी है ॥ ४ ॥
जा से पूछौं कोउ न बतावै, और करै उपहासी है ॥ ५ ॥
पलटुदास हम खोजि निकारा, ह्वै बैरागिनि खासी है ॥ ६ ॥

(३८)

पिया पिया बोलै पपीहा है, सबद सुनत फाटै हीया है ॥ टेक ॥
सोवत से मैं चौंकि परी हौं, धकर धकर करै जीया है ॥१॥
पिय की सोच परी अब मो को, पिय बिनु जीवन छीया है ॥२॥
बैरी होइ के आय पपीहा, बिरह जँजाल मोहिं दीया है ॥३॥
हित मेरा यह बड़ा पपीहा, उपदेस आइ मोहिं कीया है ॥४॥
पलटुदास पपिहा की दौलत[2], बैराग जाइ हम लीया है ॥५॥

(३९)

साहिब के घर बिच जावोंगी । जावोंगी सुख पावोंगी ॥टेक॥
प्रेम भभूत लगाय कै सजनी । संतन कँहै रिझावोंगी ॥ १ ॥
अचरा फारि करौं मैं कफनी । सेल्ही सुरति बनावोंगी ॥ २ ॥
धूनी ध्यान अकास में दैहौं । नाम को अमल चढ़ावोंगी ॥ ३ ॥
पलटूदास मारि कै गोता । भक्ति अभय लै आवोंगी ॥ ४ ॥

(४०)

अब तो मैं बैराग भरी । सोवत से मैं जागि परी ॥ १ ॥
नैन बने गिर के झरना ज्यों । मुख से निकरै हरी हरी ॥ २ ॥
अभरन तोरि बसन धै फारौं । पापी जिउ नहिं जात मरी ॥ ३ ॥
लेउँ उसास सीस दै मारौं । अगिनि बिना मैं जाउँ जरी ॥ ४ ॥
नागिनि बिरह डसत है मो को । जात न मो से धीर धरी ॥ ५ ॥
सतगुरु आइ किहिन बैदाई । सिर पर जादू तुरत करी ॥ ६ ॥
पलटूदास दिहा उन मो को । नाम सजीवन मूल जड़ी ॥ ७ ॥

---

(१) बन और पहाड़ । (२) बदौलत ।

(४१)

साहिब से लागी री सजनी । मेरो ब्याह भयो बिन मँगनी ॥१॥
लागि गई तब लाज कहाँ की । कल न परै दिन रजनी ॥२॥
ना नैहर ना सासुर की मैं । सहज लगी कछु लगनी ॥३॥
जब हम रहे पिया तब नाहीं । बूझो बात बैरगनी ॥४॥
ज्ञान में सोवौं मोह में जागौं । नहिं सोवौं नहिं जगनी ॥५॥
भूखल नाहिं न रहौं खाये बिनु । नहिं संग्रह नहिं त्यगनी ॥६॥
पलटूदास चलौं नहिं बैठौं । नहीं भजन नहिं भजनी ॥७॥

(४२)

प्रेम बान जोगी मारल हो, कसकै हिया मोर ॥ टेक ॥
जोगिया कै लालि लालि अँखियाँ हो, जस कँवल कै फूल ।
हमरी सुरुख चुनरिया हो, दूनौं भये तूल[1] ॥१॥
जोगिया कै लेउँ मिर्गछलवा हो, आपन पट चीर ।
दूनौं कै सियब गुदरिया[2] हो, होइ जाब फकीर ॥२॥
गगना में सिंगिया बजाइन्हि हो, ताकिन्हि मोरी ओर ।
चितवन में मन हरि लियो हो, जोगिया बड़ चोर ॥३॥
गंग जमुन के बिचवाँ हो, बहै झिरहिर नीर ।
तेहिं ठैयाँ जोरल सनेहिया हो, हरि लै गयो पीर ॥४॥
जोगिया अमर मरै नहिं हो, पुजवल मोरी आस ।
करम लिखा बर पावल हो, गावै पलटूदास ॥५॥

(४३)

पिय से मान न कीजे रजनी[3], सजनीं हठ तजि दीजे ।
जो तू पिय को चाहै प्यारी, सतसंगति भजि लीजै ॥
पलटुदास तन मन धन दै कै, प्रेम पियाला पीजै ॥

(४४)

रटौं मैं राम को बैठी, पड़े हैं जीभ में छाला ।
थके हग पंथ को जोहत[4], जपौं मैं प्रेम का माला ॥ १ ॥

(१) तुल्य = बराबर । (२) एक लिपि में "कै सियब गुदरिया" की जगह "करब गठिजोरवा' है । (३) रात । (४) रास्ता निहारते ।

कुसल जब पीव को देखौं, देखे बिनु नाहिं जीवौंगी।
खेलौंगी जान पर अपने, पियाला जहर पिवौंगी ॥ २ ॥
बिरह की आग है लागी, मुझे कुछ और ना सूझै।
सजन वह बड़ा बेदरदी, हमारी दरद ना बूझै ॥ ३ ॥
दीपक को भावता नाहीं, पतँग तन जारि भया राखी।
पलटूदास जिय मेरा, तुम्हारे बीच है साखी ॥ ४ ॥

(४५)

अरे दैया हमरे पिया परदेसी ॥ टेक ॥

इक तो मैं पिय की बिरह बियोगिनि, मो कहँ कछु न सुहाई।
दुसरे सासु ननद मारै बोली, छतिया मोरि फटि जाई ॥ १ ॥
चुइ चुइ आँसु भींजि मोर अँचरा, भींजि गई तन सारी।
भूख न भोजन नींद न आवै, झुकि झुकि उठौं सम्हारी ॥ २ ॥
अपने पियहिं पाती लिखि पठइउँ, मरम न जानै काऊ।
उमगे जोबन राखि न जाई, तुम थाती[1] लै जाऊ ॥ ३ ॥
बारी[2] रहिउँ भइउँ तरुनापा[3], सेत भये तन केसा।
पलटूदास पिया नहिं आये, तब हम गइनि बिदेसा ॥ ४ ॥

॥ प्रेम ॥

(४६)

घूँघट को पट खोलौंगी। जोगिन ह्वै के डोलौंगी ॥ १ ॥
लोक लाज कुल कानि छोड़ि कै। हँसि हँसि बातैं बोलौंगी ॥ २ ॥
का रिसियाइ करै कोइ मेरा। जग से नाता तोरौंगी ॥ ३ ॥
ज्ञान कि ढोल बजाय रैन दिन। गगन रखाना[4] फोरौंगी ॥ ४ ॥
पलटूदास भई मतवारी। प्रेम पियाला घोरौंगी ॥ ५ ॥

(४७)

सतगुरु से लागी नेही है, बात बहुत यह मेहीं[5] है ॥टेक॥
परदा काह खसम से कीजे, जिन देखा सब देंही है ॥ १ ॥

(१) अमानत। (२) छोटी। (३) जवान। (४) मोका। (५) बारीक।

भूलि परी मैं जग के बीचे, बाँह पकरि लिहा तेही है ॥ २ ॥
दीनदयाल पतित के पावन, जन सरनागति लेही है ॥ ३ ॥
पलटूदास धन्य इक सतगुरु, और बात सब येही है ॥ ४ ॥

(४८)

जल औ मीन समान, गुरु से प्रीति जो कीजै ॥ टेक ॥
जल से बिछुरै तनिक एक जो, छोड़ि देत है प्रान ॥ १ ॥
मीन कँह लै छीर में राखै, जल बिनु है हैरान ॥ २ ॥
जो कछु है सो मीन के जल है, जल के हाथ बिकान ॥ ३ ॥
पलटूदास प्रीति करै ऐसी, प्रीति सोई परमान ॥ ४ ॥

(४९)

प्रेम दिवाना मन यार, गुरु के हाथ बिकाना ॥ टेक ॥
निसु दिन लहर उठत अभि अंतर, बिसरा पियना खाना ॥ १ ॥
गगन गुफा में कुंजगली है, तेहि में जाइ समाना ॥ २ ॥
सहस कमल दल मानसरोवर, तेहि बिच भँवर लुभाना ॥ ३ ॥
पलटूदास अमल बिनु अमली, आठ पहर मस्ताना ॥ ४ ॥

(५०)

जानी जानी पिया हो, तुमको पहिचानी ॥ टेक ॥
जब हम रहली बारी भोली, तुम्हरो मरम न जानी ।
अब तो भागि जाहु पिया हम से, तब हम मरद बखानी ॥ १ ॥
बहुत दिनन पर भेंट भई है, फाग खेलन हम ठानी ।
धन सम्पत लै खाक मिली तन, तजि कै मान गुमानी ॥ २ ॥
इँगला पिंगला सुखमन खेलै, अजपा सखी सयानी ।
तुरिया नाँघि चली घर अपने, झझकि झझकि झझकानी ॥ ३ ॥
प्रेम के रँग अबीर भरि थारी, जोति में जोति समानी ।
पलटू जीते हारि चले पिय, ना कछु लाभ न हानी ॥ ४ ॥

(५१)

जो पिय के मन मानी रे, सोइ नारि सयानी ॥ टेक ॥
पीतम हमरे पाती पठाई, देखि देखि मुसुकानी ।

बाँचत पाती जुड़ानी छाती, आपु में उलटि समानी ॥१॥
भूषन भोजन नींद न भावै, देखत रूप अघानी ।
लोग कहैं सखि लाज करो तुम, हम चेतन ह्वै बौरानी ॥२॥
रंग महल में जाइ के बैठी, ऋतु बसंत जहँ आनी ।
सुखमन गावै भाव बतावै, देखि नाच हरखानी ॥३॥
पलटुदास असमान फोरि कै, सबद की करै बखानी ।
पुतरी लोन कि सिंधु समानी, उलटि कहै को बानी ॥४॥

(५२)

पिया है प्रेम का प्याला । हुआ मन मस्त मतवाला ॥ १ ॥
भया दिल होस से भाई । बेहोसी जगत बिसराई ॥ २ ॥
बिंद में नाद का मेला । उलटि के खेल यह खेला ॥ ३ ॥
जोग तजि जुक्ति को पाई । जुक्ति तजि रूप दरसाई ॥ ४ ॥
रूप तजि आपु को देखा । आपु में पवन की रेखा ॥ ५ ॥
उसी की गिरह संसारा । पलटूदास है न्यारा ॥ ६ ॥

(५३)

हरि रस छकि मतवाला है, वा के लगी है खुमारी ॥टेक॥
सात सरग की बात बतावै । देखत कै वह बाला[1] है ॥ १ ॥
तीन लोक की एक चाल है । वा की उलटी चाला है ॥ २ ॥
नहिं मुद्रा नहिं भेष बनावै । जपता अजपा माला है ॥ ३ ॥
ज्ञान मँहै उनमत्त रहतु है । भूला जग जंजाला है ॥ ४ ॥
भूख पियास नहीं कछु वा के । लगै न गरमी पाला है ॥ ५ ॥
पलटुदास जिन हरि रस चाखा । पिये न दूजा प्याला है ॥ ६ ॥

(५४)

संतन सँग निसि दिन जागौंगी, जागौंगी सँग लागौंगी ॥टेक॥
तन मन धन न्योछावर करि कै । पुलकि पुलकि चित पागौंगी ॥१॥

---

(१) लड़का, कम उमर ।

सयन[1] करत कै पाँव दाबिहौं। भक्ति दान बर माँगौंगी ॥ २ ॥
सीत प्रसाद पेट भरि खैहौं। चौरासी घर त्यागौंगी ॥ ३ ॥
पलटूदास जो दाग करम को। उलटि दाग फिर दागौंगी ॥ ४ ॥

(५५)

सतगुरु को घर लै आवौंगी, फूलन सेज बिछावौंगी ॥ टेक ॥
सरगुन दरि कै दाल घनैहौं। निरगुन भात रिन्हावौंगी ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति कै चौक पुरैहौं। सबद कै कलस धरावौंगी ॥ २ ॥
रतन जड़ित की चौकी पर लै। सतगुरु को बैठावौंगी ॥ ३ ॥
ज्ञान कै थार सुमति कै झारी। सतगुरु कँह जेंवावौंगी ॥ ४ ॥
तत्तु गारि कै अतर लगावौं। त्रिकुटी मँह पौढ़ावौंगी ॥ ५ ॥
पलटूदास सोवन लगे सतगुरु। सुखमन बेनियाँ डोलावौंगी ॥ ६ ॥

(५६)

मैं जानौं पिय मोर, पिया नहिं आपन सजनी ॥ टेक ॥
पिय मोर चंद चकोर भये हम, आग चुनत तन तजनी ॥ १ ॥
हम धन कमल पिया मोर सूरुज, गगन देखि मुख गजनी ॥ २ ॥
मैं पतंग पिय दीपक मोरा, अनचाहत सँग भजनी ॥ ३ ॥
पलटूदास जाहि तन लागी, कल न परै दिन रजनी ॥ ४ ॥

(५७)

सैयाँ के बचन गड़ि गे मोरे हिय में ॥ टेक ॥
गगन महल पिय मोहिं गुहराइन्हि,
सबद स्रवन सुनि कल नहिं जिय में ॥ १ ॥
भेद भरी तन कै सुधि नाहीं,
यह मन जाइ बसो मोरे पिय में ॥ २ ॥
खोजत खोजत हारि रह्यो है,
मथि मथि छाछ निकारै जस घिय में ॥ ३ ॥
पलटूदास के गोबिंद साहिब,
आइ मिले मोहिं प्रेम गलिय में ॥ ४ ॥

---
(१) नींद।

(५८)

हम भजनीक में नाहीं अवधू, आँखि मूँद नहिं जाहीं ॥ टेक ॥
इक भजनीक भजन है इक ठो, तब वह भजन में जावै ।
भजनी भजन चक भा दूनों, वा के भजन न आवै ॥ १ ॥
खसम की मजा परी है जिनको, सो क्या नैहर आवै ।
हुमा[1] पच्छी रहै गगन में, वा के जगत न भावै ॥ २ ॥
बुन्द परा सागर के माहीं, वह ना बुन्द कहावै ।
लोन की डेरी[2] परी पानी में, कहवाँ से फिरि पावै ॥ ३ ॥
तेल कि धार लगी निसि बासर, जोति में जोति समानी ।
पलटुदास जो आवै जावै, सो चौथाई ज्ञानी ॥ ४ ॥

(५९)

रँगि ले रंग करारी है, फिर छुटै न धोये ॥ टेक ॥
ज्ञान को माट ताहि बिच बोरो, मन बुधि चित रँग डारी है ॥ १ ॥
तन मन धन सब देइ रँगाई, रंग मजीठी[3] भारी है ॥ २ ॥
रंग बहुत यह सोखि लेइगी, बहुत दिनन की सारी है ॥ ३ ॥
सतसंगति में बैठि रँगावै, सोइ पतिबरता नारी है ॥ ४ ॥
पलटूदास पहिरि के निकरै, अपने पिय की प्यारी है ॥ ५ ॥

(६०)

गाँठि परी पिय बोलै न हम से ॥ टेक ॥
निसि दिन जागौं मैं पिय की सेजिया ।
नैना अलसाने निकरि गे घर से ॥ १ ॥
जो मैं जनतिउँ पिय रिसियैहैं ।
काहे को प्रीति लगौतिउँ अस ठग से ॥ २ ॥
अपने पिय को मैं बेगि मनैहौं ।
सौ तकसीर होत प्रभु जन से ॥ ३ ॥

---

(१) स्वर्ग की एक चिड़िया जिसकी छाया पड़ने से आदमी बादशाह हो जाता है ।
(२) डली । (३) पक्का लाल रंग ।

सुनि मृदु बचन पिया मुसुकाने।
पलटुदास पिय मिले बड़े तप से ॥ ४ ॥

(६१)

राम तो हितकारी मेरे, और न कोई आस है ॥ टेक ॥
जब से दरस दीन्हा, प्रान उन हर लीन्हा
तन की बिसरी सुधि, सही जक्त उपहास है ॥ १ ॥
प्रेम की फाँसी बाझी, जक्त की लाज त्यागी।
उठी अकुलाय मानो, सोवत से जाग है ॥ २ ॥
कहत है पलटूदास, तजहु सकल आस।
एक ही भरोसा राखौ, एक ही बिस्वास है ॥ ३ ॥

(६२)

मेरो मन जोगियैं हर लीन्हा, ना जानौं क्या कीन्हा ॥ टेक ॥
तन मन की सुधि रही न एकौ, परी प्रेम की फाँसी।
यहि जोगिया के कारन माई, सहौं जगत उपहासी ॥ १ ॥
भूख न लागै नींद न आवै, छुटा अन्न औ पानी।
यहि जोगिया की अजब सुरति पर, देखत भइउँ दिवानी ॥ २ ॥
जब से दृष्टि परी जोगी पर, कल न परै दिन राती।
यहि जोगिया के कारन माई, जरौं तेल बिनु बाती ॥ ३ ॥
प्रान करौं न्योछावर जोगी पर, लोक लाज मैं त्यागा।
पलटूदास कहौं मैं का से, ये जोगियैं मन लागा ॥ ४ ॥

॥ बिश्वास ॥

(६३)

मैं जग की बात न मानौंगी। ठान आपनी ठानौंगी ॥ १ ॥
कहे सुने से खाँड़ आपनी। नाहिं धूरि में सानौंगी ॥ २ ॥
कहे सुने से हीरा आपनो। नाहिं काँच में आनौंगी ॥ ३ ॥
जग की ओर तनिक नहिं ताकौं। सतसंगति पहिचानौंगी ॥ ४ ॥
पलटूदास कहे से का भा। जो जानौं सो जानौंगी ॥ ५ ॥

॥ सूरमा ॥

(६४)

समुझि बूझि रन चढ़ना साधो, खूब लड़ाई लड़ना है ॥ टेक ॥
दम दम कदम पड़ै आगे को, पीछे नाहिं पछड़ना है।
तिल तिल घाव लगै जो तन में, खेत सेती क्या टरना है ॥ १ ॥
सबद खैंचि समसेर[1] जेर कर, उन पाँचो को धरना है।
काम क्रोध मद लोभ कैद कर, मन कर ठौरै मरना है ॥ २ ॥
खड़ा रहै मैदान के ऊपर, उन की चोट सँभरना है।
आठ पहर असवार सुरत पर, गाफिल नाहीं पड़ना है ॥ ३ ॥
सीस दिहा साहिब के ऊपर, किस की डेर अब डेरना है।
पलटू बाना रुण्ड[2] के ऊपर, अब क्या दूसर करना है ॥ ४ ॥

(६५)

सो रजपूत जा को काया कोट ॥ टेक ॥
काम क्रोध मन में मउवास[3]। इन दुष्टन को देइ निकास ॥१॥
पाँच सिपाह जगीरीदार। नित उठि मन से करते रार ॥२॥
इन पाँचो को डारो मार। गढ़ भीतर तुमहीं सरदार ॥३॥
लोभ मोह यह करिहैं चोट। जौं लगि पैहैं तिल भर ओट ॥४॥
पलटूदास सोई रजपूत। मन को मारि के होइ सपूत ॥५॥

॥ उपदेश ॥

(६६)

बनत बनत बनि जाइ, पड़ा रहै संत के द्वारे ॥ टेक ॥
तन मन धन सब अरपन कैके, धका धनी को खाय ॥ १ ॥
मुरदा होय टरै नहिं टारे, लाख कहै समुझाय ॥ २ ॥
स्वान बिरित पावै सोइ खावै, रहै चरन लौ लाय ॥ ३ ॥
पलटूदास काम बनि जावै, इतने पर ठहराय ॥ ४ ॥

(६७)

हाट लगी है दाया की कोइ करैगा सौदा ॥ टेक ॥
लादै को जस लादेन्हि अपजस, परि गइ फाँसी माया की ॥१॥

---

(१) तलवार। (२) धड़। (३) चोर।

नफा को आएन्हि मूर गँवाएन्हि, माल जगातिन[1] खाया की ॥२॥
बगल में लरिका सहर ढँढोरा, नाहिं लेइ सुधि काया की ॥३॥
पलटुदास सब जगत भुलाना, लखि परछाहीं छाया की ॥४॥

(६८)

मितऊ देहला न जगाय, निंदिया बैरिन भैली ॥ टेक ॥
की तो जागै रोगी भोगी, की चाकर की चोर ।
की तो जागै संत बिरहिया, भजन गुरू कै होय ॥ १ ॥
स्वारथ लाय सभै मिलि जागैं, बिन स्वारथ ना कोय ।
परस्वारथ को वह नर जागै, जापै किरपा गुरु की होय ॥ २ ॥
जागे से परलोक बनतु है, सोये बड़ दुख होय ।
ज्ञान खरग लिये पलटू जागै, होनी होय सो होय ॥ ३ ॥

(६९)

बनिया समुझ के लाद लदनियाँ ॥ टेक ॥
यह सब मीता काम न आवै, सँग न जाइ परधनियाँ ॥ १ ॥
पाँच मने की पूँजी राखत, होइगे गर्ब गुमनियाँ ॥ २ ॥
करि ले भजन साध की सेवा, नाम से लाव लगनियाँ ॥ ३ ॥
सौदा चाहे तो याँही करि ले, आगे न हाट दुकनियाँ ॥ ४ ॥
पलटुदास गोहराय कहत हैं, आगे देस निरपनियाँ ॥ ५ ॥

(७०)

को खोलै कपट किवरिया हो, सतगुरु बिन साहिब ॥ टेक ॥
नैहर में कछु गुन नहिं सीख्यो, ससुरे में भई फुहरिया हो ।
अपने मन की बड़ी कुलवंती, छुए न पावै गगरिया हो ॥ १ ॥
पाँच पचीस रहै घट भीतर, कौन बतावै डगरिया हो ।
पलटूदास छोड़ि कुल जतिया, सतगुरु मिले सँघतिया हो ॥ २ ॥

(७१)

अब से खबरदार रहु भाई ॥ टेक ॥
सतगुरु दीन्हा माल खजाना, राखो जुगत लगाई ।

(१) कर लेने वाले ।

पाव रती घटने नहिं पावै, दिन दिन होत सवाई ॥ १ ॥
छिमा सील की अलफी पहिनो, ज्ञान लँगोटि लगाई ।
दया कि टोपी सिर पर दै कै, और अधिक बनि आई ॥ २ ॥
बस्तु पाइ गाफिल मति रहना, निसु दिन करौ कमाई ।
घट के भीतर चोर लगतु हैं, बैठे घात लगाई ॥ ३ ॥
तन बन्दूक सुमति कै सिंगरा, ज्ञान के गज ठहकाई ।
सुरति पलीता हर दम सुलगै, कस पर राख चढ़ाई ॥ ४ ॥
बाहर वाला खड़ा सिपाही, ज्ञान गम्य अधिकाई ।
पलटूदास आदि के अदली, हर दम लेत जगाई ॥ ५ ॥

(७२)

साहिब मेरा सब कुछ तेरा, अब नाहीं कुछ मेरा है ॥ १ ॥
यहि हमता ममता के कारन, चौरासी किहा फेरा है ॥ २ ॥
मृग-जल निरखि के तृषा बुझै नहिं, सूखे अटका बेरा[1] है ॥ ३ ॥
यह संसार रैन का सुपना, रूपा भ्रम सीपी केरा है ॥ ४ ॥
पलटुदास सब अरपन कीन्हा, तन मन धन औ डेरा है ॥ ५ ॥

(७३)

टुक हरि भजि लेहु, मन मेरे यार मुसाफिर ॥ टेक ॥
पानी पवन अगिन से जोरा, धरती और अकासा ।
पाँच तत्तु का महल उठाया, तहाँ लिया तुम बासा ॥ १ ॥
को तुम कवन कहाँ ते आया, बारम्बार ठगाया ।
इतनी बात भुलै के कारन, फिरि फिरि गोता खाया ॥ २ ॥
इतनी बात चेत नहिं तुमको, जिस कारज को आया ।
माया मोह लालच के कारन, अपनो रूप भुलाया ॥ ३ ॥
मन के कारन रामचन्द्रजी, गये गुरू के पासा ।
खसर फसर में कारज नाहीं, कहते पलटूदासा ॥ ४ ॥

---

(१) नाव ।

(७४)

साहिब के दरबार में कमी कुछ नाहीं ।
चूक चाकरी में परी दुबिधा मन माहीं ॥ १ ॥
बेनियाज[1] हाजिर रहै तकसीर हमारी ।
कुसियारी के कीट में किन चारा डारी ॥ २ ॥
अकिल आपनी क्या करै अकीन[2] न आया ।
बुन्द से पिण्ड सँवारिया तिसको बिसराया ॥ ३ ॥
खसम बिसारै आपना सोइ काफिर भाई ।
पीर पराई ना लखै सोइ जाति कसाई ॥ ४ ॥
जाति वही असराफ है दिल दर्द को आनी ।
पलटुदास सोइ पाक है दुर्वेस निसानी ॥ ५ ॥

(७५)

सहस कमल दल फूला है, तहवाँ चलु भँवरा ॥ टेक ॥
यह संसार रैन को सुपना, कहा फिरै तू भूला है ॥ १ ॥
पलटूदास उलटिगा भँवरा, जाय गगन बिच झूला है ॥ २ ॥

(७६)

साहिब से परदा का कीजे । भरि भरि नैन निरखि लीजे ॥ १ ॥
नाचै चली घूँघट क्यों काढ़ै । मुख से अंचल टारि दीजे ॥ २ ॥
सती होय का सगुन बिचारै । कहि के माहुर[3] क्या पीजे ॥ ३ ॥
लोक बेद तन मन की डेर है । प्रेम रंग में क्या भीजे ॥ ४ ॥
पलटूदास होय मरजीवा[4] । लेहि रतन नहिं तन छीजै ॥ ५ ॥

(७७)

गुप्त मते की बात जगत में फहस[5] न कीजे ॥ टेक ॥
पात्र सुपात्र देखि जब लीजै, बस्तु ताहि को दीजे ॥ १ ॥
यह संसार मोम का कपड़ा, जल बिच कोर न भीजे ॥ २ ॥
तजि बकवाद मौन ह्वै रहिये, बोलत काया छीजे ॥ ३ ॥
पलटू कहै सुनो भाइ साधो, बचन गाँठि गहि लीजे ॥ ४ ॥

(१) बिना प्रार्थना या माँग के । (२) बिश्वास । (३) विष । (४) जो मोती निकालने के लिये समुद्र में डुबकी लगाते हैं । (५) प्रगट ।

(७८)

नहीं मुख राम गाओगे, आगे दुख बड़ा पाओगे। १।
राम बिन कौन तारैगा, पकड़ जमदूत मारैगा। २।
कबौं[1] सतसंग ना कीन्हा, भूखे को नाहिं कुछ दीन्हा। ३।
माया औ मोह में भूले, कुटुम परिवार लखि फूले। ४।
पुछै धर्मराज जब भाई, बचन मुख नाहिं कहि आई। ५।
पलटूदास लखि रोया, सुघर[2] तन पाय के खोया। ६।

॥ भेद ॥
(७९)

पलटू कहै साच कै मानो, और बात झूँठ कै जानो। १।
जहवाँ धरनी नाहिं अकासा, चाँद सुरज नाहीं परगासा। २।
जहवाँ पवन जाय ना पानी, बेद कितेब मरम ना जानी। ३।
जहवाँ ब्रह्मा बिस्नु न जाहीं, दस औतार न तहाँ समाहीं। ४।
आदि जोति ना बसै निरंजन, जहवाँ सुन्न सबद नहिं गंजन। ५।
निराकार ना उहाँ अकारा, सत्य सबद नाहीं बिस्तारा। ६।
जहवाँ जोगी जोग न पावै, महादेव ना तारी[3] लावै। ७।
उहवाँ हद अनहद ना जावै, बेहद वह रहनी ना पावै। ८।
जहवाँ नाहिं अगिन परगासा, पाँच तत्तु ना चलता स्वासा। ९।
ब्रह्म ज्ञान ना पहुँचै उहवाँ, अनुभौ पद ना बोलै तहवाँ। १०।
सात सर्ग अपबर्ग न कोई, पिंड उहाँ ब्रह्मण्ड न होई। ११।
जहवाँ करता करै न पावै, सिद्धि समाधि ध्यान ना लावै। १२।
अजपा गिरा[4] लंबिका[5] नाहीं, जगमग झिलिमिलि उहाँ न जाहीं १३
सोहं सोहं उहाँ न बोलै, चलै न जुक्ति सुरत ना डोलै। १४।
उहवाँ नाहिं रहै अबिनासी, पूरन ब्रह्म सकै ना जासी। १५।
निरभौ नाद नहीं ओंकारा, निरगुन रूप नहीं बिस्तारा। १६।
पलटूदास तहाँ चलि गया, आगे है पाछे ना भया। १७।
पलटू देखि हाथ को मलै, आगे कहै तो परदा खुलै। १८।

---

(१) कभी। (२) सुन्दर। (३) ध्यान। (४) बानी। (५) गले के भीतर की घाँटी।

॥ दोहा ॥

आदि अंत अरु मध्य नहिं, रंग रूप नहिं रेख।
गुप्त बात गुप्तै रही, पलटू तोपा[1] देख ॥ १६ ॥

(८०)

आदि अंत ठिकानी बातैं, कहौं आपनी देखी हो ॥ टेक ॥
राह अजान पंथ को पावै, त्रिकुटी घाट उतारा हो।
अबिगत नगर जाय जहँ पहुँचे, मारग बिहँग बिचारा हो ॥१॥
बायें चन्द सुर है दहिने, सुखमन सुरति समानी हो।
सोहं सोहं सुन में बोलै, वही सब्द की खानी हो ॥२॥
तुरिया बैठा जाग्रत जोगी, लगी उनमुनी तारी हो।
इँगला माहीं सहज समानी, पिंगला पवन अहारी हो ॥३॥
हद पर बैठे सतगुरु बोलैं, बेहद बोलै चेला हो।
अजपा जाप छुटी है दुतिया, अनुभव भया अकेला हो ॥४॥
सुन्न संबत द्वादस है अठवाँ, चार तत्व से न्यारा हो।
पलटू यह टकसारी सिक्का, परखैगा कोइ प्यारा हो ॥५॥

(८१)

कौन करै बनियाई अब मोरे, कौन करै बनियाई ॥टेक॥
त्रिकुटी में है भरती मेरी, सुखमन में है गादी।
दसयें द्वारे कोठी मेरी, बैठा पुरुष अनादी ॥१॥
इँगला पिंगला पलरा दूनौं, लागि सुरति की जोती।
सत्त सबद की डाँड़ी पकरौं, तौलौं भरि भरि मोती ॥२॥
चाँद सुरज दोउ करैं रखवारी, लगी तत्त की ढेरी।
तुरिया चढ़ि के बेचन लागे, ऐसी साहिबी मेरी ॥३॥
सतगुरु साहिब किहा सिपारस, मिली राम मोदियाई।
पलटू के घर नौबति बाजै, निति उठि होत सवाई ॥४॥

(1) ढक दिया।

(८२)

चलहु सखी वहि देस, जहवाँ दिवस न रजनी। टेक।
पाप पुन्न नहिं चाँद सुरज नहिं, नहीं सजन नहिं सजनी। १।
धरती आग पवन नहिं पानी, नहिं सूतै नहिं जगनी। २।
लोक बेद जंगल नहिं बस्ती, नहिं संग्रह नहिं त्यगनी। ३।
पलटूदास गुरू नहिं चेला, एक राम रम रमनी। ४।

(८३)

साधो भाई उहवाँ के हम बासी, जहवाँ पहुँचै नहिं अबिनासी। टेक।
जहवाँ जोगी जोग न पावै, सुरति सबद नहिं कोई।
जहवाँ करता करे न पावै, हम हीं करैं सो होई॥ १॥
ब्रह्मा बिस्नु नाहिं गमि सिव की, नहीं तहाँ अबिनासी।
आदि जोति उहाँ अमल न पावै, हमहीं भोग बिलासी॥ २॥
त्रिकुटी सुन्न नाहि है उहवाँ, दंडमेरु ना गिरिवर।
सुखमन अजपा एकौ नाहीं, बंकनाल ना सरवर॥ ३॥
जहवाँ पाँच तत्त ना स्वासा, जगमग झिलिमिलि नाहीं।
पलटूदास की औघट घाटी, बिरला गुरमुख जाहीं॥ ४॥

(८४)

गगन बोलै इक जोगी है, सुनु चित दे सखी री। टेक।
खाय न पीवैं मरै न जीवैं, नाम सुधा रस भोगी है। १।
वा के रंग रूप नहिं रेखा, देखत परम बिरोगी है। २।
ज्ञान दृष्टि से नजर परतु है, दसयें द्वार इक चोंगी है। ३।
पलटूदास सुनैगा सोई, चढ़ि सतगुरु की डोंगी है। ४।

(८५)

साधो भाई वह पद करहु बिचारा,
जो तीनि लोक से न्यारा॥ टेक॥
छर अच्छर चौंतिस में कहिये, सहस नाम तेहिं माहीं।
निःअच्छर वह जुदा रहतु है, लिखे पढ़े में नाहीं॥१॥

सुन्न गगन में सबद उठतु है, सो सब बोल में आवै।
निःसबदी वह बोलै नाहीं, सो सत सबद कहावै ॥ २ ॥
रहनी रहै कथै फिरि कथनी, उन को कहिये ज्ञानी।
रहनी कथनी दूनौं छूटै, सो पूरा बिज्ञानी ॥ ३ ॥
सुरति लगावै ध्यान धरै जो, सो सब आप में आवै।
सुरति ध्यान एकौ में नाहीं, सो अजपा कहवावै ॥ ४ ॥
जोग करै सो रूढ़ मता है, मुक्ति मँहै सब आवै।
छोड़ै रूढ़ अरूढ़ को पावै, साची मुक्ति कहावै ॥ ५ ॥
हद बेहद को अनुभै कहिये, निरअनुभै है जावै।
पलटुदास बेहद में बैठे, सो वहि पद को पावै ॥ ६ ॥
॥ शान्ति ॥

(८६)

चित मेरा अलसाना, अब मोसे बोलि न जाइ ॥ टेक ॥
देहरी लागै परबत मो को, आँगन भया है बिदेस।
पलक उघारत जुग सम बीतै, बिसरि गया सन्देस ॥ १ ॥
बिष के मुए सेती मनि जागी, बिल में साँप समाना।
जरि गया छाछ भया घिव निरमल, आपुइ से जुपियाना[1] ॥ २ ॥
अब ना चलै जोर कछु मेरा, आन के हाथ बिकानी।
लोन की डरी परी जल भीतर, गलि के होइ गइ पानी ॥ ३ ॥
सात महल के ऊपर अठएँ, सबद में सुरति समाई।
पलटूदास कहौं मैं कैसे, ज्यों गूँगे गुड़ खाई ॥ ४ ॥

(८७)

सत बेधि रहो है[2], का से यह भेद कहौं ॥ टेक ॥
रोम रोम में नाद उठतु है, जग गति जाइ जरै।
हाल हमारी कोऊ ना जानै, और की और करै ॥ १ ॥
पुलकित गात पलक न परै मोर, टकटक ताकि रहो।
सिथिल भये मुख बचन न आवै, ज्यों ठगहार गहो ॥ २ ॥

(१) चुप हुआ। (२) दूसरे पाठ में "सत बेधि रहो" की जगह "मन मौज मिली" है।

यह अचरज का से अब कहिये, जिन देखा सोइ जानै।
होइ अचरज अचरज को खोजै, तब अचरज पहिचानै ॥ ३ ॥
पलटू हेरत आपु हिरानी, केहि बिधि करै सम्हार।
होइ अचेत झुकि झुकि परै चेतन, ऐसी हाल हमार ॥ ४ ॥

॥ साच ॥

(८८)

साचा हरि दरबार, झूठा ठिकै न कोई। टेक।
झूठा छिपै न लाख छिपावै, अंत को होत उघार। १।
झूँठा रंग रँगै जो कोई, चटक रहै दिन चार। २।
हरि की भक्ति सहज है नाहीं, ज्यों चोखी तरवार। ३।
पलटूदास हाथ अपने से, सिर को लेइ उतार। ४।

॥ दीनता ॥

(८९)

जाय मनाओं मैं साजन को, केहि भाँति सखी री। टेक।
भूली फिरों राह न पाओं, सतगुरु चाही सँग लागन को। १।
मैं मूरख मन मलिन भयो है, ज्ञान चाही तन माँजन को। २।
भूख पियास छुटै नहिं मेरी, पाँच भूत चाही त्यागन को। ३।
मोह मया निद्रा रहै घेरे, आठ पहर चाही जागन को। ४।
पलटूदास साध की संगति, उठि उठि मन चाहै भागन को। ५।

॥ अनुभव ज्ञान ॥

(९०)

कहिबे से क्या भया भाई, जब ज्ञान आपु से होई ॥ टेक ॥
अतलपच्छ के चेटुका[1], वा को कौन करै उपदेस।
उलटि मिलै परिवार में, वा से कौन कहै संदेस ॥ १ ॥
ज्यों सिसु[1] होत मराल[2] के, वा को कौन सिखावै ज्ञान।
नीर कहै अलगाइ कै, वह छीर करतु है पान ॥ २ ॥
सिंह कै बच्चा गिरि पर्‌यो, वह खेलत तुरत सिकार।
वा को कौन सिखावई, वो हस्ती डारत मार ॥ ३ ॥

(१) बच्चा। (२) हंस।

संत को कौन सिखावता, उन्ह अनुभव भा परकास ।
सिखई बुधि केहि काम की, जो हृदय न पलटूदास ॥ ४ ॥

॥ बाचक ज्ञान ॥

(६१)

बाचक ज्ञान न नीका ज्ञानी, ज्यों कारिख का टीका ॥ टेक ॥
बिनु पूँजी को साहु कहावै, कौड़ी घर में नाहीं ।
ज्यों चोकर के लड्डू खावै, का सवाद तेहि माहीं ॥ १ ॥
ज्यों सुवान[1] कुछ देखि कै भूँकै, तिस ने तौ कछु पाई ।
वा की भूँक सुने जो भूँकै, सो अहमक कहवाई ॥ २ ॥
बातन सेती नहीं होइ राजा, नहिं बातन गढ़[2] टूटै ।
मुलुक मँहे तब अमल होइगा, तीर तुपक जब छूटै ॥ ३ ॥
बातन से पकवान बनावै, पेट भरै नहिं कोई ।
पलटूदास करै सोइ कहना, कहे सेती क्या होई ॥ ४ ॥

॥ अद्वैत ॥

(६२)

जोई जीव सोई ब्रह्म एक है, दृष्टि अपानी चर्मा ॥ टेक ॥
जिव से जाइ ब्रह्म तब होता, जिव बिनु ब्रह्म न होई ।
फल में बीज बीज में फल है, अवर न दूजा कोई ॥ १ ॥
नीर में लहर लहर में पानी, कैसे कै अलगावै ।
छाया में पुरुस पुरुस में छाया, दुइ कहवाँ से पावै ॥ २ ॥
अच्छर में मसी[3] मसी में अच्छर, दुइ कहवाँ से कहिये ।
गहना कनक कनक में गहना, समझि चुप्प करि रहिये ॥ ३ ॥
जीव में ब्रह्म ब्रह्म में जिव है, ज्ञान समाधि में सूझै ।
माटि में घड़ा घड़ा में माटी, पलटूदास यों बूझै ॥ ४ ॥

॥ मन ॥

(६३)

मन बनिया बान न छोड़ै ॥ टेक ॥

---

(१) स्वान = कुत्ता । (२) किला । (३) स्याही ।

पूरा बाट तरे खिसकावै, घटिया कौं टकटोरै ।
पसँगा माहै करि चतुराई, पूरा कबहुँ न तौलै ॥ १ ॥
घर में वा के कुमति बनियाइन, सबहिन को झकझोरै ।
लड़िका वा का महा हरामी, इमरित में बिष घोरै ॥ २ ॥
पाँच तत्त का जामा पहिरे, ऐंठा गुइंठा डोलै ।
जनम जनम का है अपराधी, कबहूँ साच न बोलै ॥ ३ ॥
जल में बनिया थल में बनिया, घट घट बनिया बोलै ।
पलटू के गुरु समरथ साईं, कपट गाँठि जो खोलै ॥ ४ ॥

(६४)

सो बनिया जो मन को तौलै ॥ टेक ॥
मनहिं के भीतर बसी बजार, मनहीं आपु खरीदनहार । १ ।
मनहीं में लेन देन मनहिं दुकान, मनहीं में मन की गुजरान । २ ।
मनहीं में लादै उलदै अनत न जाय, मनहिं की पैदा मनहिं में खाय । ३
मनहीं में तराजू मनहिं में सेर, पलटूदास सब मनहीं का फेर । ४ ।

॥ प्रेम ॥

(६५)

माया हमें अब जनि बगदावो, तुम तो ठगिनी जग बौरावो ॥ टेक ॥
देवन के घर भइउ अपसरा, जोगी के घर चेली ।
सुर नर मुनि तौ सब ही खायो, होइ अलमस्त अकेली ॥ १ ॥
कृस्न कँहै गोपी होइ खायो, राम कँहै होइ सीता ।
महादेव काँ पारबती होइ, तो से कोउ न जीता ॥ २ ॥
बिसुन कँह लछमी होइ खायो, ब्रह्मा स्त्रिष्टि बड़ाई ।
सिंगी रिषि को बन में खायो, तुम्हरी फिरी दुहाई ॥ ३ ॥
दौलत होइ तिनु[1] लोकहि खायो, गिरही की ह्वै नारी ।
पलटूदास के द्वार खड़ी है, लौंड़ी होइ हमारी ॥ ४ ॥

(१) तीनों ।

(९६)

हम से फरक रहु दूर, माया मौत तुलानी ॥ टेक ॥
आन के लेखे तुम अमृत लागहु, हमरे लेखे जस पानी ।
हमरे तुँह लौंड़ी अस नाहीं, औरन के लेखे घर रानी ॥ १ ॥
औरन के लेखे तू परबत[1], हम राई सम जानी ।
सगरो अमल करेहु तुँह माया, हम से रहौ अलगानी ॥ २ ॥
तीन लोक तुँह निगल गई है, तेहि पर नाहिं अघानी ।
पलटुदास कह बकसहु माया, नरक कि तुँही निसानी ॥ ३ ॥

(९७)

सोई है अतीत जो तो माया तें अतीत ॥ टेक ॥
माया ठगिनी ठगा संसार, सुर नर मुनि बोरे मँझधार । १ ।
माया बोलै मीठी बोल, गाँठ से ज्ञान ध्यान लेइ खोल । २ ।
माया है यह काली नाग, (जेहि काँ) काटे पानी सकै न माँग । ३ ।
पलटूदास माया यह काल, भागि बचे साहिब के लाल । ४ ।

॥ कुमति ॥

(९८)

जहाँ कुमति कै बासा है, सुख सपनेहु नाहीं । टेक ।
फोरि देत घर मोर तोर करि, देखै आपु तमासा है । १ ।
कलह काल दिन रात लगावै, करै जगत उपहासा है । २ ।
निरधन करै खाये बिनु मारै, आछत अन्न उपवासा है । ३ ।
पलटूदास कुमति है भोंड़ी[2], लोक परलोक दोउ नासा है । ४ ।

॥ पंडित ॥

(९९)

पढ़ि पढ़ि क्या तुम कीन्हा पंडित, अपना रूप न चीन्हा ॥ टेक ॥
औरन को तुम ज्ञान बताओ, तुम को परै न बूझी ।
जस मसालची सबहिं दिखावै, वा को परै न सूझी ॥ १ ॥
अपनी खबर नहीं है तुमको, औरन को परमोधो ।
पढ़ना गुनना छोड़ि के पाँड़े, अपनी काया सोधो ॥ २ ॥

---

(१) पहाड़ । (२) बुरी ।

इन्द्रिन से आजिज[1] तुम रहते, इन्द्री मारि गिराओ।
माया खातिर बकि बकि मरते, मन अपनो समुझाओ ॥ ३ ॥
बुद्धि महै परबीन चतुर हौ, खाँड़ धूरि में सानौ।
पलटूदास कहै सुनु पाँड़े, बचन हमारा मानौ ॥ ४ ॥

॥ कर्म भर्म निषेध ॥

(१००)

तिरथ में बहुत हम खोजा, उहाँ तो नाहिं कुछ पाया।
मूरति को पुजि पछिताने, नजर में नाहिं कुछ आया ॥ १ ॥
मुए हम बर्त के करते, बेद को सुना चित लाई।
जोग औ जुगति करि थाके, सजन की खबर नहिं पाई ॥ २ ॥
किया जप तप फेरि माला, खोजा षट दरस में जाई।
कोई ना भेद बतलावै, सबै सतसंग गुहराई ॥ ३ ॥
परे जब संत के द्वारे, संत ने आप सब कीन्हा।
दास पलटू जभी पाया, गुरू के चरन चित लाया ॥ ४ ॥

(१०१)

वह दरबार भारा साधो, हिन्दू मुसलमान से न्यारा। टेक।
मक्के रहे न ठाकुरद्वारा, है सब में सब खोजनहारा। १।
नहिं दरगाह न तीरथ संगा, गंगा नीर न तुलसी भंगा। २।
सालिगराम न महजिद कोई, उहाँ जनेव न सुन्नत होई। ३।
पढ़ै निवाज न लावै पूजा, पंडित काजी बसै न दूजा। ४।
फेरै न तसबी जपै न माला, ना मुरदा ना करै हलाला। ५।
मारै न सुवर जिबहे ना गाई, कलमा भजन न राम खुदाई। ६।
एकादसी न रोजा करई, डंडवत करै न सिरदा[2] परई। ७।
पलटूदास दुई की किस्ती, दोजख नर्क बैकुंठ न भिस्ती। ८।

॥ जाति भेद निषेध ॥

(१०२)

कोई जाति न पूछै हरि को भजै सो ऊँचा है। १।

---

(१) आधीन, जेर। (२) सिजदा।

कोटि कुलीन होइ ब्रह्मा सम सोभी उन से नीचा है। २।
सुपच अजामिल सदन रैदासा कौन बीज के सींचा है। ३।
सेवरी भील बिदुर दासी सुत भाजी बैर गुलीचा[1] है। ४।
पलटूदास चढ़ी जब गनिका पकरि बिमान हरि खींचा है। ५।

॥ भक्त के लक्षण ॥
(१०३)
(छन्द)

भक्त के मैं कहूँ लच्छन साधु करहु बिचारनं।
प्रथम दासा तनै करके सन्त से हित लावनं॥ १॥
रहत चलि कै सन्त सेवा द्रब्य तन मन वारनं।
तिलक कै अस्नान पूजा कर्म में चित लावनं॥ २॥
तब उपजै बैराग मन में जोग पर चित धावनं।
जोग से तब ज्ञान होवै ज्ञान भक्ति जगावनं॥ ३॥
भक्त द्वादस अष्ट आज्ञा सोई सन्त परायनं।
करै कर्म निकर्म ह्वैके सोई धर्म सनातनं॥ ४॥
अष्ट सिधि नव निद्धि ठाढ़ी ताहि को बिसरावनं।
जोग जीत अतीत माया सोई है अवधूतनं॥ ५॥
कर्म इन्द्री ज्ञान इन्द्री एक रस करि राखनं।
पाँच तत्त औ भूत पाँचो रैन दिवस जगावनं॥ ६॥
बुद्धि चित्त हंकार जोगवे सोई है सन्यासनं।
काम क्रोध औ मोह लालच ताहि को बिसरावनं॥ ७॥
छुटै भूख पियास निद्रा सकल इन्द्री जीतनं।
दुष्ट मित्र को एक जानै अस्तुति निन्दा निर्चिन्तनं॥ ८॥
रहै रहनी ओट छोड़ै अली के मैदाननं।
काना फुसकी बात छोड़ै ज्ञान चौड़ा बजावनं॥ ९॥
इक पहर एकांत ह्वै के सुन्न ध्यान लगावनं।
इक पहर सुन स्रवन हरिजस अर्थ सहित मिलावनं॥ १०॥

(१) जल्दी-जल्दी खाना।

पहर भरि कै नाद रसना सकल जंत्र बजावनं।
इक पहर कै कर्म किरिया रैन दिवस कटावनं॥ ११ ॥
पदम आसन नाहिं छूटै आठ पहर लगावनं।
करै संजम लेय ओगरा साध रहनी लच्छनं॥ १२ ॥
दसो द्वारा मूँदि मेलै पवन जतन करावनं।
मध्य त्रिकुटी गंग जमुना तहाँ आनि चढ़ावनं॥ १३ ॥
चढ़ै गगन अकास गरजै द्वार दसम निकासनं।
जोति झिलमिल झरै मोती हंस कँहै गुगावनं॥ १४ ॥
सुरत से जब निरत होवै सुरत सब्द कहावनं।
दिब्य दृष्टि बिलोकि सरवन सब्द सुरत मिलावनं॥ १५ ॥
रंग ना कछु रूप रेखा तहाँ सब कछु देखनं।
दास पलटू होय ऐसन सोई संत अलेखनं॥ १६ ॥
एक मूल दुइ चक्र नाभी चित्र उद्र के बीचनं।
बाम दक्खिन सब्द त्रिकुटी चक्र बिधी सुधारनं॥ १७ ॥
चाँद सूर अकास आनै प्रान बैठि सुधारनं।
अष्ट दल यह कँवल फूलै ध्यान कमठ लगावनं॥ १८ ॥
मीन मारग पवन पंछी सेस चाल चलावनं।
अर्ध उर्ध के बीच आसन खेल भेद मिलावनं॥ १९ ॥
इँगला पिंगला सोधि सुखमन अजपा जाप जपावनं।
नाद अनहद लंबिका सुर बंकनाल सोधावनं॥ २० ॥
जाग्रत सूतै सुप्न जागै जाग्रत सुप्न सुषोपतिं।
तुरिया सेती अतीत होवै सोई है आरूढ़नं॥ २१ ॥
देहिक दैविक छुटै भवतिक सोइ अनन्य कहावनं।
इन्द्री रहित बिछेप नाहीं सोई है आतीतनं॥ २२ ॥
पुलक गात अनन्द मूरत काल ताहि न ब्यापनं।
अलमस्त है मुदगलित हस्ती सोई है परमहंसनं॥ २३ ॥

निर्बिकार निर्बैर ह्वै के सान्ति मन में लावनं।
एक ब्रह्म समान जानै दुतिया दूरि बहावनं ॥ २४ ॥
तेल धारा लगी निसि दिन सोहं सब्द सुहावनं।
ऐसन जोगी रावला जो ताहि को आदेसनं ॥ २५ ॥
लिखै पढ़ै में नाहिं आवै अच्छर नाहिं निरच्छरं।
नाम सोई अनाम कहिये सदा सन्त सरूपनं ॥ २६ ॥
सात स्वर्ग अपवर्ग ऊपर ताहि चित्त लगावनं।
कोटि परलय नाहिं पहुँचै तहाँ सन्त सिंघासनं ॥ २७ ॥
आठ लच्छ त्रिकाल मूरति अनहद तूर बजावनं।
आवागवन से रहित होवै ऐसे सन्त को बन्दनं ॥ २८ ॥
अकल कला अनन्द मूरति लागि भजन अखंडनं।
बिन्द से जो होय न्यारा सोई है अबिनासिनं ॥ २९ ॥
मन न बुद्धि न चित्त पहुँचै निराकार निरच्छरं।
दास पलटू अकथ कथनी सोई साध समागतं ॥ ३० ॥
गगन मद्धे पदम आसन हमहिं हम गुहरावनं।
बरै मानिक झरै मोती सोई है परम बिस्नवं ॥ ३१ ॥
कंचन काँच न भेद राखै पक्खा पक्खी त्यागनं।
मोर तोर बिकार छूटै एक धारा धारनं ॥ ३२ ॥
दुष्ट मित्र को एक जानै अस्तुति निन्दा त्यागनं।
दुक्ख सुख है एक दोऊ हरष सोक बिसारनं ॥ ३३ ॥
तजै आसा सकल जग की परम धरम संतोषनं।
तत्त-दरसी भजन द्वादस सहज समाधि लगावनं ॥ ३४ ॥
संग्रह त्याग न जोग भोगी पाप पुन्य बिसारनं।
चारि फल औ तीन गुन को बिषय तृन सम त्यागनं ॥ ३५ ॥
महा परलय ध्यान कीजै तहाँ इक ओंकारनं।
ब्रह्म ज्ञान न जोग जप तप नेम नहिं आचारनं ॥ ३६ ॥

चारि बरन से होय न्यारा पंडिता षटदर्सनं ।
घाटि बाढ़ि न प्रीति कीजे एक धारा धारनं ॥३७॥
अजर जरै असाध साधै मर जीवै सोइ पावनं ।
साध कै तब छुटै साधन साध असाध मिलावनं ॥३८॥
मूल बिन अस्थूल सूच्छम अछै-बृच्छ फरावनं ।
उड़ै पंछी खाय फल को अमर पुरुष कहावनं ॥३९॥
अर्ध पुंड लिलाट रेखा चक्र अंग सुहावनं ।
चन्द्र हाँस सिंगार बीरी धुईं ध्यान जरावनं ॥४०॥
सीस-फूल जड़ाव जूड़ा अंजन ज्ञान लगावनं ।
मानसी नथुनी नेह ढेंढ़ी सब्द माँग भरावनं ॥४१॥
बिबेक घँघरा तत्त सारी फुफुदी है बिस्वासनं ।
साधु सेवा अंग अँगिया रहनी बाजू-बन्दन ॥४२॥
संतोष अंग सुगंध लावै बास चहुँ दिसि धावनं ।
सुरत निरत बर बाँधि घुँघुरू पारब्रह्म रिझावनं ॥४३॥
जीव ब्रह्म से भेद नाहीं सोइ है पतिबर्तनं ।
दास पलटू होय ऐसन सोई है मम गुरुदेवनं ॥४४॥
भक्ति जोग कोइ करै अबिरल यही मन्त्र बिचारनं ।
सर्ब जीव समान जानै परम धर्म परायनं ॥४५॥
भक्ति है अनपायनी सद पावन पात्र कै नायकं ।
कोटि जन्म सतसंग कै कै सुद्ध हृदय तब आवनं ॥४६॥
तरै कर यह मूल द्वारा और नाहि उपायनं ।
भक्ति जोग है मूल टीका सर्ब मन्त्र बिचारनं ॥४७॥
राम कृस्न उचारि रसना हृदय तत्त निरूपनं ।
सुरत सेल्ही जाप मुद्रा सोई संत परायनं ॥४८॥
ज्ञान गुदरी गले सोहै चन्द्र तिलक लिलाटनं ।
टोप सिर पर जोति झलकै प्रेम भभूत चढ़ावनं ॥४९॥

अड़बंद खोलहि निरत प्रति कुबरी है संतोषनं ।
धुइं ध्यान अकास जारै फामरी बिबेकनं ॥५०॥
छिमा आसन सांति तुम्बा मेखली पर-स्वार्थनं ।
सब्द दोनों कान कुण्डल तत्त द्वादस पुस्तकं ॥५१॥
संजम माला पवन सुमिरन अजपा जाप जपावनं ।
असंठ तीरथ साधु सेवा गुफा पिंड बनावनं ॥५२॥
जटा सील सुभाव अचला भजन अमल चढ़ावनं ।
दास पलटू होय ऐसन सोई है आतीतनं ॥५३॥
काया कुंडी पवन घोटा अमल है हरि नामनं ।
रहनी साफी तत्त प्याला ऐसोई है अचिंतनं ॥५४॥
संजम तोय तड़ाग पूरन ताहि बैठि नहावनं ।
धीरता सोइ पादुका है ताहि पर असवारनं ॥५५॥
मनै मूरति तनै देवल, ताहि को अब पूजनं ।
गगन में मन मगन होवै चित्त पुहुप चढ़ावनं ॥५६॥
ब्रह्म ज्ञान त्रिसूल गल बिच मेखली मृगछालनं ।
खुसी भोजन दया डासन पान खाय प्रतीतनं ॥५७॥
भाव भक्ति को ओढ़ि ऊपर गगन मद्धे सूतनं ।
गरमी पाला एक जानै सीत धूप बराबरं ॥५८॥
चित्त चीपी ज्ञान डीबी ध्यान इंधन लावनं ।
गंग जमुना बीच आसन तहाँ पवन चढ़ावनं ॥५९॥
फूटि गे ब्रह्मंड जबही सकल सिद्ध कहावनं ।
सहस दल तहँ कँवल फूला मानसरोवर बीचनं ॥६०॥
गगन बीचे बजत मुरली सोहं सब्द सुहावनं ।
कुंजगली है साँकरी इक दूजा और न जावनं ॥६१॥
पवन की इक बहै सलिता बंक नाम के बीचनं ।
सहस धारा असी संगम रैन दिवस गुजारनं ॥६२॥

सुन्न में कछु नाहिं सूझै तहाँ बहुत अँधेरनं।
कड़क बिजुली तहाँ तड़पै जहाँ चित्त सम्हारनं ॥६३॥
चन्द्र बाँये सूर दहिने अललपच्छ उड़ावनं।
उलटि मकरी तार गहि कै सुरति को यों लावनं ॥६४॥
महल अठयें जाय बैठे जहाँ ना कोउ दूजनं।
बरत है इक दीप जहवाँ महल में उँजियारनं ॥६५॥
दास ईस से भेद नाहीं मौज बैठि के मारनं।
दास पलटू होय ऐसन सोई है परमेसुरं ॥६६॥
चिन्ता नाहीं छुटत मन से बिना जोग के साधनं।
अगम निगम बिचारि देखौ यही मत सिद्धान्तनं ॥६७॥
ध्रुव प्रहलाद सनकादि कीन्हा ब्यास औ सुकदेवनं।
तत्तात्रेय जड़ भरथ कीन्हा राजा रघु सोइ धारनं ॥६८॥
सहित जननी कपिल कीन्हा जनक अष्टाबक्रनं।
स्त्रीमुख से हरि आपु भाखा सहित ऊधो अर्जुनं ॥६९॥
सोई नौ जोगेसर कीन्हा नानक तुलसि कबीरनं।
दास पलटू साधि यह सब बचन सो प्रतिपालनं ॥७०॥
बिना जोग न छुटै चिन्ता कोटि करै उपायनं।
जोग करि जब सधै कारज निर्गुन सर्गुन बराबरं ॥७१॥
उलटि ताकै चाल उलटी अलख को आलेखनं।
सन्त जन जब करत दाया लगै सो उपदेसनं ॥७२॥
पड़ा रहु सतसंग भीतर सन्त बड़े दयालनं।
भर्म भागै मगन लागै भृङ्गी कीट बनावनं ॥७३॥
पारस के परसंग सेती लोह ह्वै गे कंचनं।
मलया के परसंग सेती सकल बन भे चन्दनं ॥७४॥
नाम को जो मिलन चाहै और नाहिं उपायनं।
जग हँसै तो हँसन दीजै लोक लाज बहावनं ॥७५॥

जौन रहनी संत रहते रहनी सोई अब धारनं ।
लोभ मोह हंकार तृस्ना ताहि दूर बहावनं ॥७६॥
भूख और पियास निद्रा काम क्रोध बिसारनं ।
आँख मूँदि के ध्यान लावै द्वार दसवाँ खोलनं ॥७७॥
नाम कै सुर नाद अनहद सब्द कै झनकारनं ।
गैब कँहै स्रवन सूच्छम सब्द कँहै सुनावनं ॥७८॥
मन्त्र बिनु इक बजत जन्त्री नाना लहर तरङ्गनं ।
मौज मारै बैठि के तहँ रतन जड़ित सिंघासनं ॥७९॥
वही है तिहुँ लोक ऊपर उनसे बड़ा न दूसरं ।
साष्टांग दण्डवत पलटू तिनहिं को परदच्छिनं ॥८०॥
सेस कमठ अकास आनै चाँद सूर पतालनं ।
गगन की धुनि खबरि आनै सोई सन्त सुजाननं ॥८१॥
तिलक द्वादस भजन इक-रस गगन में झनकारनं ।
पवन निसि दिन चलै उलटी पच्छिम गङ्ग बहावन ॥८२॥
कठिन मारग बिषम घाटी बहुत सूच्छम पन्थनं ।
पहिले सीस उतारि घालै पाँव को तब राखनं ॥८३॥
नाम का घर ख्याल नाहीं सहज मत कोउ जाननं ।
जीवत मरै सोई भेद पावै लोक लाज बहावनं ॥८४॥
अधर में दरियाव है इक पवन को तहकीकनं ।
अधोमुख इक कूप है दरियाव के तहँ बीचनं ॥८५॥
कूप ऊपर ऊँच है इक अधर बीच सुमेरन ।
सुमेर ऊपर महा देवल देवल ऊपर छेदनं ॥८६॥
ताहि पैंड़े निकरि जावै सोई सन्त सुजाननं ।
खोजि के जब खोजि पावै सकल दुक्ख मिटावनं ॥८७॥
कर्म बन्धन सकल छूटै जीवन मुक्ति कहावनं ।
भजत भजत भजन होइगे सोई है करतारनं ॥८८॥

भजन में है जुगल मारग बिहँग और पपीलनं।
पपील मद्धे सिद्ध कहिये बिहँग सन्त कहावनं ॥८९॥
अनेक जन्म जब सिद्ध होवै अन्त सन्त कहावनं।
सिद्ध से जब सन्त होवैं आवागवन मिटावनं ॥९०॥
सन्त के हरि निकट रहते सिद्ध से हरि दूरिनं।
सिद्ध चिन्ता रहत दिसि दिन सन्त भजन अचिन्तनं ॥९१॥
रूप रस औ गन्ध छूटै पारस को अलगावनं।
तरत है ले नाम ओकर सोई मन्त्र बिचारनं ॥९२॥
बिन्द में तहँ नाद बोलै रैन दिवस सुहावनं।
दास पलटू होय ऐसन सोई बिस्नु सरूपनं ॥९३॥
सीस धरै उतारि भूँई रुण्ड से तब धावनं।
सीस पर जब पाँव राखै अधर चाल चलावनं ॥९४॥
अधोमुख इक कूप है तेहि कूप भीतर जावनं।
सुरति से ब्रह्मंड खोलै सब्द को ठहरावनं ॥९५॥
तहँ बुन्द चूवै गगन से इक साँपिनी मुख मध्यनं।
मारि साँपिनि चलै आगे अमी रस तेहि पीवनं ॥९६॥
हद अनहद को छोड़ि देवै बेहद कदम चलावनं।
बेहद के मैदान भीतर सब्द की झनकारनं ॥९७॥
सेत बरन सरूप वा को तहाँ ध्यान सुहावनं।
बुन्द जाय समुद्र मिलि गे बहुरि नहिं फिरि आवनं ॥९८॥
सहज लगी समाधि जेकर भजन सदा अखण्डनं।
धन्य जननी पिता ओकर जहाँ है हरि भक्तनं ॥९९॥
धन नगर धन देस कहिये जहाँ भक्त निवासनं।
बैकुंठ है लघु तासु पटतर[1] सहित मथुरा अवधेसनं ॥१००॥
प्रीति से जो छन्द बाँचै सहित कथा अस्थूलनं।
दास पलटू मोर पद को अन्त समय पधारनं ॥१०१॥

---

(१) मुकाबले में।

॥ साध सन्त की रहनी ॥

(१०४)

सुनिये साध सन्त की रहनी, भाई और बात ना कहनी ।१।
मन से सँकलप बिकलप छोड़ै, जग से तोड़ै हरि से जोड़ै ।२।
कबहीं ओढ़ै साल दुसाला, कबहीं ओढ़ि रहै मृगछाला ।३।
कबहीं नहीं पाँव में जोड़ा, कबहीं सौ सौ कोतल घोड़ा ।४।
कबहीं अतर फुलेल लगावै, कबहीं सिर पर खाक चढ़ावै ।५।
कबहीं ज्ञान कहै समुझावै, कबहीं चुप करि तारी[१] लावै ।६।
कबहीं हमा-नियामत[२] खावै, कबहीं दस फाका बित जावै ।७।
कबहीं हिंदू होइ कै बैठै, कबहीं मुसलमान में पैठै ।८।
कबहीं सेज सुपेदी होई, कबहीं जमीं मँहै रहै सोई ।९।
कबहीं बाँका भेष बनावै, कबहीं भेष को दूरि बहावै ।१०।
कबहीं सिर पर जटा बिसाला, कबहीं कंठी टीका माला ।११।
कबहीं होइ कै बैठै जोगी, कबहीं सब रस का है भोगी ।१२।
कबहिं कीरतन नाच करावै, कबहिं आप ही बन बन धावै ।१३।
कबहीं हाजिर[३] महल अटारी, कबहीं टाटी नाहिं दुवारी ।१४।
कबहीं लड़िकन के सँग खेलै, कबहीं बेद पुरान को बोलै ।१५।
कबहीं रोवै सिर दै मारै, कबहीं हँसि हँसि निसि दिन टारै ।१६।
कबहीं कनक थार में पावै, कबहीं हाथै पर लै खावै ।१७।
कबहीं परै पाँव में छाला, कबहीं चलता है सुखपाला[४] ।१८।
कबहीं फटही[५] लँगोटी, कबहीं है मोतिन की चोटी ।१९।
कबहीं माया की है कोठी, कबहीं लोन बिना की रोटी ।२०।
कबहीं राजसिंहासन जागै,[६] कबहीं भिच्छा घर घर माँगै ।२१।

॥ छन्द ॥

पलटू ये लच्छन सन्त कै, कछु नाहिं संग्रह त्याग है ।
प्रारब्ध पर वै डारि देते, लगै न उनको दाग है ॥२२॥

(१) ध्यान । (२) छप्पन प्रकार के भोजन । (३) दूसरी लिपि में "हजारों" है । (४) पालकी । (५) यहाँ ठेठ हिन्दी शब्द गुदा के अर्थ का है । (६) दूसरी लिपि में "गाजै" है ।

आपनी सब उक्ति छोड़ौ, जुगति ना कछु कीजिये।
करनवाला और है, संतोष क्यों ना लीजिये ॥२३॥

॥ दोहा ॥

पलटू गुनना छोड़ि दे, चहै जो आतम सुक्ख।
संसय सोइ संसार है, जरा मरन को दुक्ख ।२४।

कबहीं हरि दासन कौ दासा, कबहीं पूरन ब्रह्म निवासा ।२५।
कबहीं सब से गोड़ धरावै, कबहीं आप पायँ परि आवै ।२६।
कबहीं कहै गरीबी बानी, कबहीं ह्वै बैठै अभिमानी ।२७।
कबहीं हरि लीला को गावै, कबहीं आपु में राम बतावै ।२८।
कबहीं जग को साच बतावै, कबहीं मिथ्या करि ठहरावै ।२९।
कबहीं सर्गुन बात बतावै, कबहीं निर्गुन रूप दिखावै ।३०।
कबहीं द्वैत मता बतरावै, कबहीं अद्वैत ह्वै जावै ।३१।
कबहीं कारज ह्वै दिखरावै, कबहीं कारन में मिलि जावै ।३२।
कबहीं रुष्ट पुष्ट ह्वै जावै, कबहीं हाड़ै हाड़ दिखावै ।३३।
कबहीं घरबासी ह्वै जावै, कबहीं महा त्याग दिखरावै ।३४।
कबहीं रोज हजारों खरचै, कबहीं आप खाय बिन तरसै ।३५।
कबहीं संग हजारों भेषा, कबहीं फिरत अकेले देखा ।३६।
कबहीं निन्दा नीकी लागै, कबहीं निन्दा सुनि कै भागै ।३७।
कबहीं अस्तुति सुनि कै रोवै, कबहीं अस्तुति सुनि खुस होवै ।३८।
कबहीं नारिन से हँसि बोलै, कबहीं नाहिं पलक को खोलै ।३९।
कबहीं सब संसार हरावै, कबहीं हार आपु से जावै ।४०।
कबहीं भूप दरस ना पावै, कबहीं भूप के घर चलि जावै ।४१।
कबहीं दुष्ट को निकट बुलावै, कबहीं क्रोध रूप दिखरावै ।४२।
कबहीं मित्र को गारी देता, कबहीं लाय हदै में लेता ।४३।
कबहीं गङ्गा बैठि नहावै, कबहीं खंडन करि बतलावै ।४४।
कबहीं पात एक ना तोरै, कबहीं डार पात सब मोरै ।४५।

कबहीं सुभ को असुभ बतावै, कबहीं असुभ को सुभ ठहरावै ।४६।
कबहीं सब ज्ञानिन को राजा, कबहीं करै मूरख कौ काजा ।४७।
कबहीं मूरति को सिर नावै, कबहीं मूरति फोड़ि उड़ावै ।४८।
कबहीं तिरगुन किहे पसारा, कबहीं तिरगुन से है न्यारा ।४६।
कबहीं उठि कै मारन धावै, कबहीं छिमा समुँद ह्वै जावै ।५०।
कबहीं करत नेम आचारा, कबहीं छूति कौ नाहिं बिचारा ।५१।
कबहीं कंचन दूरि बहावै, कबहीं कौड़ी लै गठियावै ।५२।
कबहीं गरमी पाला मानै, कबहीं दोउ पकरि कै भानै ।५३।
कबहीं सुख को दुख करि जानै, कबहीं दुख को सुख करि मानै ।५४।

॥ छन्द ॥

सन्त के कछु नाहिं बन्धन, एक टेक न राखहीं ।
दोऊ एक समान के, कछु झूठ साच न भाखहीं ॥५५॥
जो कहै बचन बनाय चौड़े, नाहिं डेर मन में करै ।
हम नाहिं हैं परमातमा, यह बूझि कै कोइ पचि मरै ॥५६॥

॥ दोहा ॥

दोउ से न्यारे सन्त हैं, हैं दोऊ के बीच ।
पलटू ज्ञान समाधि में, ज्यों रबि प्रति घट बीच ॥५७॥
करै करावै राम जी, और न दूजा कोय ।
पलटू ऐसी समुझ में, मुक्ति भक्त की होय ॥५८॥

॥ मंगल ॥
(१०५)

मैं जानौं पिय मोर, पिया नहिं अपना हो ।
छिन में कियेहु उजाड़, बसा पुर पटना हो ॥ १ ॥
कब दहुँ गयेहु है निकरि, नाहिं पहिचाना हो ।
सब कोउ छेके ठाढ़, मरम नहिं जाना हो ॥ २ ॥
बैसिहि सकल सरीर, कछू नहिं बिगरा हो ।
कवन सकस यह रहा, कवन बिधि निकरा हो ॥ ३ ॥

दस दरवाजा सून, रूप नहिं रेखा हो ।
उड़ि गये पंछी पवन, जात किन्ह देखा हो ॥ ४ ॥
नित उठि मंगल होय, छतीसो रागा हो ।
सो मन्दिर भये सून, चुनन लागे कागा हो ॥ ५ ॥
जनि कोइ करै गुमान, इहै गति होना हो ।
पलटुदास हरि नाम, लेइ सो सोना हो ॥ ६ ॥

(१०६)

जनमिउँ दुख की राति, परिउँ भौसागर हो ।
सोइ गइउँ भ्रम माहिं, कुमति कै आगर हो ॥ १ ॥
सतगुरु दिहिन्हि जगाइ, उठिउँ अकुलाई हो ।
टूटि गइल भ्रम फन्द, परम सुख पाई हो ॥ २ ॥
पिय को दिहिन्हि मिलाइ, हिये मोहिं लीन्हा हो ।
अपनी दासी जानि, परम पद दीन्हा हो ॥ ३ ॥
सत्त सुकृति कै घैला[1], प्रेम कै लेजुर[2] हो ।
पनियाँ भरौं डफोरि[3], माँग भरि सेंदुर हो ॥ ४ ॥
सासु मोरि सुतै गज-ओबरि[4], ननद मोरि अँगना हो ।
हम धन सुतैं धवराहर[5], पिय सँग जगना हो ॥ ५ ॥
झिरिहिरि बहै बयारि, अमी रस ढरकै हो ।
वरमी[6] नोरँगिया कै डारि, चँदन गछ मरकै[7] हो ॥ ६ ॥
तेहि चढ़ि बोलै हंस, सबद सुनि बाउर हो ।
मंगल पलटूदास, जगति कै नाउर[8] हो ॥ ७ ॥

(१०७)

मातु पिता सुत बन्धु, कोऊ नहिं अपना हो ।
छिन में होत परार[9], सकल जग सपना हो ॥ १ ॥

---

(१) घड़ा । (२) रस्सी । (३) पानी को झकझोर कर जिसमें खर कतवार हट जाय । (४) इतना बड़ा कमरा जिसके दरवाजे में से हाथी चला जाय । (५) ऊपर का कोठा । (६) झुको । (७) मरमराना या लचक कर टूटे-टूटे हो जाना । (८) नाऊ जिसके शुभ अवसरों पर मंगला-चरन गाने की चाल कहीं कहीं है । (९) पराया, बेगाना ।

माया रूपी नारि, रहत सँग लागी हो।
हंसा कीन्ह पयान, प्रेत कहि भागी हो॥ २ ॥
धावन धाये लोग, बेगि रथ साजा हो।
करहिं अमङ्गलचार, कहाँ गये राजा हो॥ ३ ॥
लाइ दिह्यो मुख आगि, काठ बहु भारा हो।
पुत्र लिहे कर बाँस, सीस तकि मारा हो॥ ४ ॥
हैं बैरिन के मूल, तिन्हैं हित जाना हो।
पलटुदास गुरु-ज्ञान बूझि अलगाना हो॥ ५ ॥

॥ सोहर ॥

(१०८)

अरि अरि सुरति सोहागिनि, पैयाँ तोरी लागौं हो।
ललना रूठल कन्थ मनावौं, यही बर माँगौं हो॥ १ ॥
तुम्हरे मनाये सुरतदेइ, जो पिय आवहिं हो।
ललना उजड़ल नगर बसावहु, मोहिं जुड़ावहु हो॥ २ ॥
गज मोती चौक पुरावहुँ, कलस धरावहुँ हो।
ललना ऊँचे चढ़ि बैठावहुँ, पिया जो पावहुँ हो॥ ३ ॥
तू जनि मोहिं अगुतावहु[1], नरक जनि नावहु हो।
ललना कंत से तुमहिं मिलावहु, तो सुरति कहावहु हो॥ ४ ॥
बरहें बरस पिय आये, तो मोहिं गुहराइनि हो।
ललना गगन किवारी खोलिनि, हमहिं मनाइनि हो॥ ५ ॥
पलटुदास भ्रम भागै, चित अनुरागै हो।
ललना मन-बांछित फल होइ, बार नहिं लागै हो॥ ६ ॥

(१०९)

मोर पिया बसै पुर पाटन, हम धन हिंयवै हो ललना।
अपने पिय की सुद्धि जो पौतिउँ, हम धन कहँवौं हो ललना॥ १ ॥

---

(१) जल्दियाना।

अँग अँग भभूति लगौतिउँ, बनै फल खातिउँ हो ललना।
धरतिउँ जोगिनिया के भेस, पास पिय जातिउँ हो ललना ॥ २ ॥
खोज में निकसिउँ गैलिउँ बिदेसवाँ, पिय भल पायौं हो ललना।
चरन कँवल सिर नाय, मनहिं समुझायौं हो ललना ॥ ३ ॥
गर्भ रहा बिस्वास, पिया मोर जानै हो ललना।
अचरज खाय सब लोग, कोई नहिं मानै हो ललना ॥ ४ ॥
पलटूदास के सोहर, जो कोई गावै हो ललना।
दसवें मास इक पुत्र लहै, सुख पावै हो ललना ॥ ५ ॥

॥ बसन्त ॥

(११०)

ए मन भौंरा कित लुभाय, ऋतु बसंत तेरो चल्यौ जाय ॥टेक॥
काया बन तेरो रह्यो है फूल, अमृत रस हरि नाम मूल।
चहुँ दिसि आवै बास सुबास, आनँद छः ऋतु बरहो मास ॥ १ ॥
भाँति भाँति आवै सुगंध, पाड़र सूँघन जासु अंध[1]।
अछै बृच्छ सोभित बिसाल, फल लागे तहँ लाल लाल ॥ २ ॥
भँवरा लालच दुरि बलाय, हरि तजि बाहर मरै धाय।
घर बैठे तू करु बिलास, मगन रहौ जनि होहु उदास ॥ ३ ॥
एक तो भँवरा भयेउ बूढ़, रूप पिवौ अब हूँढ़ हूँढ़।
पलटुदास इक अधर अधार, पुहुप बीच करु गुंजमार[2] ॥ ४ ॥

॥ होली ॥

(१११)

होरी खेलौं मैं पिय के संग, मेरा कोइ क्या करै ॥ टेक ॥
तन भाठी मन बैठि चुवावै, पिय का पियाया नैन भरै ॥ १ ॥
सासु बुरी घर ननद तुफानी, देखि सुहाग हमार जरै ॥ २ ॥
पलटूदास पिया घर आये, अस्तुति निन्दा भाड़ परै ॥ ३ ॥

(१) हे अंधे भँवरा (अर्थात् मन) तू अपने अंतर की सुगंधि को छोड़ कर क्यों बाहर के पाड़र सरीखे दुर्गन्ध फूलों के सूँघने को जाता है। (२) गुंजार।

॥ हिंडोला ॥

(११२)

अरे सखि निरखि लेहु, आकास हिंडोलवा हो ॥ टेक ॥
सुभग सुहावन बादर हो, हरि हरि परै बूँदि ।
भीतर कै दर[1] खोलहु हो, बाहर कै लेहु मूँदि ॥ १ ॥
चमकि चमकि उठै बिजुली हो, बादर दौरा जाय ।
कहूँ लाल कहुँ पीयर हो, सखि सबद उठै घहराय ॥ २ ॥
ज्यों ज्यों पवन झकोरहि हो, त्यों त्यों घटा गँभीर ।
पवन परै[2] तब बरसै हो, सखि गगन से निरमल नीर ॥ ३ ॥
ससि औ भान तारागन हो, निरमल भयो अकास ।
पलटुदास हम झूलहिं हो, सखि अपने पिय के पास ॥ ४ ॥

॥ बारहमासा ॥

(११३)

सखी मोरे पिय की खबरि न आई हो ॥ टेक ॥
मास असाढ़ गगन घन गरजै, सब सखि छानि छवाई ।
हौं बौरी पिया बिनु डोलौं, सून मँदिल बिनु साईं ॥ १ ॥
सावन मेघ गरज मोरि सजनी, कोयल कुहुक सुनाई ।
हौं बौरी प्रीतम बिनु ब्याकुल, तलफत रैनि बिहाई ॥ २ ॥
भादौं गरुव गँभीर सखी री, काली घटा नभ छाई ।
चमकत बिजुलि घोर घन गरजत, सूनि सेज पिय नाहीं ॥ ३ ॥
क्वार मास सब जुड़ि मिलि सखियाँ, झूठै माँगन आईं ।
हमरे बलमु परदेस बिलमि रहे, उन बिनु कछु न सुहाई ॥ ४ ॥
कातिक घर घर सब सखियाँ मिलि, रचि रचि भवन बनाई ।
मैं पापिनि प्रीतम बिनु सजनी, रोइ रोइ दिवस गँवाई ॥ ५ ॥
अगहन अग्र[3] सनेह सबै सखि, पिय सँग गवने जाईं ।
देखि देखि मोहिं बिरह बढ़तु है, पिय बिनु जिय अकुलाई ॥ ६ ॥

(१) किवाड़ । (२) ठहर जाय । (३) उत्तम ।

पूस मास परदेस पियरवा, आवन की सुधि नाहीं।
काह करौं कित जाउँ सखी री, किन दूतिन बिलमाई ॥ ७ ॥
माघ तुसार[1] परन लागो सजनी, पतियौ नाहिं पठाई।
ऐसे निपट कठोर कृपामय, निपटै सुधि बिसराई ॥ ८ ॥
फागुन मास आस जब टूटी, जोगिनि होइ कै धाई।
गैब नगर के गलिन गलिन में, पिय पिय सोर मचाई ॥ ९ ॥
चैतै चित चिंता अति बाढ़ी, तन मन भसम[2] चढ़ाई।
निसि बासर मग जोहत सजनी, नैन नीर झरि लाई ॥१०॥
बैसाखे बंसी धुनि सुनि सजनी, मन अति तलफ मचाई।
बिरह भुवंग डस्यो मोरे हिय रे, तन मन की सुधि न रहाई ॥११॥
जेठै जब यह गति भइ सजनी, निरखि परी इक झाईं[3]।
सुन्न मँदिल इक मूरति दरसी, देखत जियरा गुड़ाई ॥१२॥

॥ मिश्रित ॥

(११४)

धुबिया रहै पियासा जल बिच, लागि जाय मुँह लासा ॥ टेक ॥
जल में रहै पियै नहिं मूरख, सुन्दर जल है खासा।
अपने घर सन्देस पठावै, करै धोबिनि कै आसा ॥ १ ॥
एक रती को सोर लगावै[4], छूटि जाय भर मासा।
आपै बटै करम की रसरी, अपनै गल कर फाँसा ॥ २ ॥
आपुइ रोवै आपुइ धोवै, आपुइ रहै उदासा।
दाग पुराना छूटै नाहीं, लील बिषै की बासा ॥ ३ ॥
साबुन ज्ञान लेइ नहिं मूरख, है सन्तन के पासा।
पलटूदास दाग कस छूटै, आछत अन्न उपासा ॥ ४ ॥

(११५)

हरि को मैं बेगि रिझाओंगी, भजन महैं सुख पाओंगी ॥टेक॥
ज्ञान ध्यान के घुँघुरू बाँधौं, लटकि लटकि गुन गाओंगी। १।

(१) बरफ। (२) भभूत। (३) झलक। (४) चिल्लावै।

अँगिया सुमति प्रेम की सारी, नवनि[1] नाथ[2] झमकाओंगी । २ ।
घँघरा पहिरि बिबेक घेर कौ, अंजन सील बनाओंगी । ३ ।
बाजूबंद अनंद पहिरि कै, सबद से माँग भराओंगी । ४ ।
सुरति सुहागिनि पैयाँ पर लोटै, सूतत कंथ जगाओंगी । ५ ।
पलटुदास यह खेल खेलि कै, बहुरि नहीं फिर आओंगी । ६ ।

(११६)

है कांइ सखिया सयानी, चलै पनिघटवा पानी ॥ टेक ॥
सतगुरु घाट गहिर बड़ सागर, मारग है मोरी जानी ।
लेजुरी सुरति सबद कै घैलन, भरहु तजहु कुल कानी ॥ १ ॥
निहुरि के भरै घयल नहिं फूटै, सो धन प्रेम दिवानी ।
चाँद सुरुज दोउ अंचल सोहैं, बेसर लट अरुझानी ॥ २ ॥
चाल चलै जस मैगर[3] हाथी, आप पहर मस्तानी ।
पलटूदास झमकि भरि आनी, लोक लाज ना मानी ॥ ३ ॥

(११७)

साधो देखि परो क्या गाई, तत्त में तत्त समाई ॥ टेक ॥
कसर रहै तौ कुन्दन नाहीं, खरा भये क्या खोलै ।
बकुला सेती हंस भयो है, पाछिल बोल न बोलै ॥ १ ॥
बिष परपंच मिटा भा इस्थिर, मनि गन अजगर सोई ।
जौं लगि छाछ रहै घिव माहीं, तौं लगि चुप[4] ना होई ॥ २ ॥
जौं लगि तोई[5] डोलै बोलै, तौं लगि माया माहीं ।
मगन भये पर अब क्या बोलै, हरि हैं अब हम नाहीं ॥ ३ ॥
भूख पियास एको नहिं लागै, छूटि गई दुचिताई ।
पलटूदास जो ऐसा जोगी, बोलै कौन बड़ाई ॥ ४ ॥

(११८)

समुझि देखु मन मानी, पलटू निरगुन बनियाँ ॥ टेक ॥
चारि बेद कै टाट बिछावत, तेहि चढ़ि करत दुकनियाँ ॥ १ ॥

(१) झुकना, दीनता । (२) नथ । (३) मस्त । (४) जब तक सब छाछ जल नहीं जाती तब तक घी कड़ाही में बोलता रहता है । (५) पानी ।

सत्य सेर मन प्रेम तराजू, नाम कै मारत टेनियाँ[1] । २ ।
सुरति सबद कै बैल लदाइनि, ज्ञान कै गोंनि[2] लदनियाँ । ३ ।
सहर जलालपुर मूँड़ मुड़ाइनि, अवध तोरिनि करधनियाँ । ४ ।
पलटूदास सतगुरु बलिहारी, पाइनि भक्ति अमनियाँ । ५ ।

(११६)

चाहौ मुक्ति जो हरि कौ सुमिरौ, हम तो हरि बिसराया हो ॥ टेक ॥
सुमिरत नाम बहुत दिन बीते, नाहक जनम गँवाया हो ।
मुक्ति बिचारी करै खवासी, पिय कौ हम अपनाया हो ॥ १ ॥
साहिब मेरा मुझ को सुमिरै, मैं ना सीस नवावौं हो ।
बैठा रहौं सौक[3] में अपने, केकर दास कहावौं हो ॥ २ ॥
बूझी बात खुला अब परदा, क्योंकर साच छिपावौं हो ।
जैसन देखौं तैसन भाखौं, मैं ना झूठ कहावौं हो ॥ ३ ॥
संका नाहिं करौं काहू की, हमसे बड़ कोउ नाहीं हो ।
पलटूदास कवन है दूजा, हमहीं हैं सब माहीं हो ॥ ४ ॥

(१२०)

खालिक खलक खलक में खालिक, ऐसा अजब जहूरा है ।
हाजी हज्ज हज्ज में हाजी, हाजिर हाल हजूरा है ॥ १ ॥
फल में फूल फूल में फल है, रोसन नबी का नूरा है ।
पलटूदास नजर नजराना, पाया मुरसिद पूरा है ॥ २ ॥

(१२१)

बैठी तमोलिन बिटिया[4] हो, कतरै बँगला पान । टेक ।
कहँ नारी तोर नैहरवा हो, कहवाँ ससुरार । १ ।
काहे के तोर कतरनी हो, का करत अहार । २ ।
सरगुन मोर नैहरवा हो, निरगुन ससुरार । ३ ।
ज्ञान कै हमरी कतरनी हो, सब्द करीला अहार । ४ ।
पाँच पुत्र हम जाया हो, सो हैं बार कुंवार । ५ ।

(१) तराजू को अँगुली से चोरी से दबा कर माल कम तौलना । (२) टाट का थैला जिसमें जिन्स भर कर लादते हैं । (३) उमंग । (४) रास्ते में ।

ससुरे गये ससुरवा हो, कहै कुलवंती नार ।६।
पलटुदास निज पूछैं हो, कहु कुसल हमार ।७।
गुरु के चरन रज अंजन हो, लेहु नैन मँझार ।८।
आवागवन नसावै हो, गुरु होवैं दयार ।९।

(१२२)

मत कोइ करो बैराग हो, बैराग कठिन है । टेक ।
जग की आस करै नहिं कबहूँ, पानी पिये नहिं माँगी हो ।१।
भूख पियास हरै अरु निद्रा, रहै प्रेम लौ लागी हो ।२।
जो कोइ धड़ पर सीस न राखै, जियत रहै तन त्यागी हो ।३।
पलटुदास बैराग कठिन है, दाग दाग पर दागी हो ।४।

(१२३)

गुरू से भेद पुछन को आया ॥ टेक ॥
कौन गुरू से मूँड़ मुँड़ाया, कहवाँ आसन लाया ।
कौन गुरू का सुमिरन कीन्हा, बिरथा जनम गँवाया ॥ १ ॥
अलख पुरुष से मूँड़ मुँड़ाया, गगन में आसन लाया ।
ओं नाम सब ही घट ब्यापै, ता से रगड़ लगाया ॥ २ ॥
दत्तात्रेय आदि के जोगी, चौबिस गुरू बनाया ।
संत जोग एको नहिं जाना[1], ता तें भटका खाया ॥ ३ ॥
इँगला पिंगला सुखमन नाड़ी, अनहद डंक[2] जगाया ।
त्रिकुटी सुन्न मद्ध के ऊपर, सोहँग सब्द समाया ॥ ४ ॥
जलावंत[3] इक सिंध अगम है, सुखमन सूरत लाया ।
उलट पलट के यह मन गरजै, गगन मँडल घर पाया ॥ ५ ॥
चौदह तबक तिहूँ के ऊपर, तहाँ निसान गड़ाया ।
पलटू कैसी अचरज तेरी, अचल साहिबी पाया ॥ ६ ॥

(१२४)

निंदरिया मोरी बैरिन भई ॥ टेक ॥

(१) सन्त सतगुरु नहीं मिले । (२) डंका । (३) जलमई ।

की कोइ जागै जोगी भोगी, की राजा की चोर।
की कोइ जागै संत बिबेकी, लगन राम की ओर॥ १॥
जागे से परलोक बनतु है, सोये बड़ दुख होय।
सतगुरु लीन्हे जो जन जागै, करतम करता होय॥ २॥
स्वारथ लीन्हे सब जग जागै, परमारथ जगै न कोय।
परमारथ को जो जन जागै, भजन बन्दगी होय॥ ३॥
काम क्रोध लीन्हे जो जागै, गये जिन्दगी खोय।
ज्ञान खरग लिहे पलटू जागै, होनी होय सो होय॥ ४॥

(१२५)

काहे को लगायो सनेहिया हो, अब तुरल[1] न जाय॥ टेक॥
जब हम रहिनि लरिकवा हो, पिया आवहि जाय।
जब हम भइनि सयानी हो, पिया गये बिदेस॥ १॥
पिय कौ पठयो सँदेसवा हो, आये पिय मोर।
हम धन पैयाँ उठि लागब हो, जिय भयल भरोस॥ २॥
सोने कि थरियिवा जेवना हो, हम दिहल परोस।
हम धन बेनियाँ डोलाउब हो, जेवैं पिय मोर॥ ३॥
रतन जड़ित इक झारी हो, जल भरा अकास।
मोरे तोरे बिच परमेसुर हो, कहै पलटू दास॥ ४॥

(१२६)

जो कोइ राखै कदम फकीरी, कफनी खुसी की डारै हो॥ टेक॥
सादी गमी एक करि जानै, झूठ कभी ना भाखै हो।
दुसमन दोस्त एक है दोऊ, इन्हैं एक घर राखै हो॥ १॥
दावा दुई दूरि होइ जावै, सो दुरवेस कहावै हो।
हेतुवा घूसा कोऊ चढ़ावै, हँसि हँसि दोऊ खावै हो॥ २॥
सीस दिहा तब अब क्या रोना, मनी मान को खोवै हो।
दम दम याद करै साहिब को, नेकी दस्त[2] में बोवै हो॥ ३॥

(१) तोड़ी। (२) हाथ।

ससुरे गये ससुरवा हो, कहै कुलवंती नार। ६।
पलटुदास निज पूछैं हो, कहु कुसल हमार। ७।
गुरु के चरन रज अंजन हो, लेहु नैन मँझार। ८।
आवागवन नसावै हो, गुरु होवैं दयार। ६।

(१२२)

मत कोइ करो बैराग हो, बैराग कठिन है। टेक।
जग की आस करै नहिं कबहूँ, पानी पिये नहिं माँगी हो।१।
भूख पियास हरै अरु निद्रा, रहै प्रेम लौ लागी हो।२।
जो कोइ धड़ पर सीस न राखै, जियत रहै तन त्यागी हो।३।
पलटुदास बैराग कठिन है, दाग दाग पर दागी हो।४।

(१२३)

गुरू से भेद पुछन को आया॥ टेक॥
कौन गुरू से मूँड़ मुँड़ाया, कहवाँ आसन लाया।
कौन गुरू का सुमिरन कीन्हा, बिरथा जनम गँवाया॥ १॥
अलख पुरुष से मूँड़ मुँड़ाया, गगन में आसन लाया।
ओं नाम सब ही घट व्यापै, ता से रगड़ लगाया॥ २॥
दत्तात्रेय आदि के जोगी, चौबिस गुरू बनाया।
संत जोग एकौ नहिं जाना[1], ता तें भटका खाया॥ ३॥
इँगला पिंगला सुखमन नाड़ी, अनहद डंक[2] जगाया।
त्रिकुटी सुन्न मद्ध के ऊपर, सोहँग सब्द समाया॥ ४॥
जलावंत[3] इक सिंध अगम है, सुखमन सूरत लाया।
उलट पलट के यह मन गरजै, गगन मँडल घर पाया॥ ५॥
चौदह तबक तिहूँ के ऊपर, तहाँ निसान गड़ाया।
पलटू कैसी अचरज तेरी, अचल साहिबी पाया॥ ६॥

(१२४)

निंदरिया मोरी बैरिन भई॥ टेक॥

(१) सन्त सतगुरु नहीं मिले। (२) डंका। (३) जलमई।

की कोइ जागै जोगी भोगी, की राजा की चोर।
की कोइ जागै संत बिबेकी, लगन राम की ओर ॥ १ ॥
जागे से परलोक बनतु है, सोये बड़ दुख होय।
सतगुरु लीन्हे जो जन जागै, करतम करता होय ॥ २ ॥
स्वारथ लीन्हे सब जग जागै, परमारथ जगै न कोय।
परमारथ को जो जन जागै, भजन बन्दगी होय ॥ ३ ॥
काम क्रोध लीन्हे जो जागै, गये जिन्दगी खोय।
ज्ञान खरग लिहे पलटू जागै, होनी होय सो होय ॥ ४ ॥

(१२५)

काहे को लगायो सनेहिया हो, अब तुरल[1] न जाय ॥ टेक ॥
जब हम रहिनि लरिकवा हो, पिया आवहि जाय।
जब हम भइनि सयानी हो, पिया गये बिदेस ॥ १ ॥
पिय कौ पठयो सँदेसवा हो, आये पिय मोर।
हम धन पैयाँ उठि लागब हो, जिय भयल भरोस ॥ २ ॥
सोने कि थरियवा जेवना हो, हम दिहल परोस।
हम धन बेनियाँ डोलाउब हो, जेवैं पिय मोर ॥ ३ ॥
रतन जड़ित इक झारी हो, जल भरा अकास।
मोरे तोरे बिच परमेसुर हो, कहै पलटू दास ॥ ४ ॥

(१२६)

जो कोइ राखै कदम फकीरी, कफनी खुसी की डारै हो ॥ टेक ॥
सादी गमी एक करि जानै, झूठ कभी ना भाखै हो।
दुसमन दोस्त एक है दोऊ, इन्हैं एक घर राखै हो ॥ १ ॥
दावा दुई दूरि होइ जावै, सो दुरवेस कहावै हो।
हेलुवा घूसा कोऊ चढ़ावै, हँसि हँसि दोऊ खावै हो ॥ २ ॥
सीस दिहा तब अब क्या रोना, मनी मान को खोवै हो।
दम दम याद करै साहिब को, नेकी दस्त[2] में बोवै हो ॥ ३ ॥

---

(१) तोड़ी। (२) हाथ।

दहसति[1] नाहिं करै किसहू की, जिकिर अपानी खोलै हो ।
पलटू रोसन इहै कमाली, तनहा[2] होइ जब डोलै हो ॥ ४ ॥

(१२७)

भेद भरी तन कै सुधि नाहीं, ऐसी हाल हमारी हो । टेक ।
पुरुष अलख लखि मन मतवाला, झुकि झुकि उठत सम्हारी हो ।१।
घायल भये नाद के लागे, मरमा[3] है सबद कटारी हो ।२।
टकटक ताकि रही ठगमूरी, आपा आप बिसारी हो ।३।
सिथिल भई मुख बचन न आवै, लागि गगन बिच तारी हो ।४।
सखि पलटू अलमस्त दिवानी, गोबिंदनन्द दुलारी हो ।५।

(१२८)

अरे बनिजारा रे भइया, तू मत करु अस ब्योपार ॥ टेक ॥
इक बनिजारा अलप जुवनियाँ[4] , दुसरे लगतु है जाड़ ।
राति बिराति चलै तोरी बरदी, लूटि लेइहि कोउ ठाढ़ ॥ १ ॥
एक तोरि रोवै माइ बहिनियाँ, दुसरे गाँव के लोग ।
तिसरे रोवै तोरी बारी बियहिया, घर घर परिगा सोग ॥ २ ॥
आगि लगो वहि घाटे बाटे, जहवाँ किहेउ पयान ।
छींकत बरदी लादेहु नायक, माँग सेंदुर भहरान ॥ ३ ॥
घर बैठे सुख बिलसहु नायक, मत तू जाहु बिदेस ।
केतिक नायक लादि गये हैं, काहू न कहा सनेस ॥ ४ ॥
प्रेम को घाट कठिन है नायक, जो कोइ उहवाँ जाई ।
पलटूदास करौं मैं बिनती, बहुरि न भवजल आई ॥ ५ ॥

(१२९)

फिरै इक जोगी नगर भुलाना, चढ़िगा महलै महल दिवाना ॥टेक॥
ना वह खावै ना वह पीवै, ना वह भिच्छा जाचै[5] ।
ना वह बोलै ना वह डोलै, बिना नचाये नाचै ॥ १ ॥

(१) भय । (२) अकेला । (३) मर्म वाली । (४) कम उमर, नौजवान । (५) माँगै ।

सुखमन के घर भाटी चूवै, पियै बंक के नाला।
जब देखौ तब प्रेम छका है, जपता अजपा माला ॥ २ ॥
गगन गुफा में सिंगी टेरै, जाग्रत के घर जागै।
तिरबेनी में आसन मारै, पारब्रह्म अनुरागै ॥ ३ ॥
सुन्न महैं मौनी होइ बैठै, अनहद तूर बजावै।
तुरिया चढ़ि गदगद होइ बोलै, लंबिका सुर लै गावै ॥ ३ ॥
सब्दै सब्द मिलावै जोगी, सुखि गा गगन रखाना[1]।
पलटूदास कौन अलगावै, बुंद में समुंद समाना ॥ ५ ॥

(१३०)

देखु रे गुरु गम मस्ताना, जानैगा कोइ साधु सयाना ।टेक।
जियते मरै सोई पहिचानै, गैब नगर सहजै चढ़ि जाना ।१।
इँगला पिंगला चँवर ढुरावै, सुखमन निसु दिन हनत निसाना ।२।
तुरिया चढ़ि जब गरजन लागे, छबि देखत सुर भूप लजाना ।३।
गुरु गोबिंद मासूक मिले हैं, आसिक ह्वै पलटू बौराना ।४।

(१३१)

देखो इक बनियाँ बौराना। ज्ञान की करै दुकाना ॥ टेक ॥
बेचै अमृत बिष सम लागै, गाहक कोऊ न आवै।
खारी माँगै खाँड़ दिखावै, आपुहि से बगदावै[2] ॥ १ ॥
देइ उधार बिना वादे[3] पर, सब से पूछै लेवो।
जो लेवै सो खुस होइ जावै, कबहुँ न कहै कि देवो ॥ २ ॥
छिमा तराजू पुरा[4] बाट लै, सबसे मीठी बोलै।
नाम रतन की ढेरी लागी, बिना दाम वह तोलै ॥ ३ ॥
कुंजी सुरत सबद का तारा, जोग जुगति से बोलै।
पलटूदास सत्त का सौदा, आठ पहर ना डोलै ॥ ४ ॥

(१३२)

हम को क्या जरूर वे, साहिब हाल हजूर वे ॥ टेक ॥

(१) रखना=मोखा। (२) भूल में डालै। (३) शर्त। (४) पूरा।

गैब तख्त बादसाह भया दिल, बजै अनाहद तूर वे ॥ १ ॥
ना जानौं दहुँ कौन पिलावै, अरस[1] पियाला नूर वे ॥ २ ॥
छिन छिन पल पल कल न परतु है, रोम रोम भरिपूर वे ॥ ३ ॥
जगमग जोति छत्र सिर ऊपर, ऐसा अजब जहूर वे ॥ ४ ॥
पलटूदास आस अब किसकी, दुरमति भागी दूर वे ॥ ५ ॥

(१३३)

माया तू जगत पियारी वे, हमरे काम की नाहीं ।
द्वारे से दूर हो लंडी[2] रे, पइठु न घर के माहीं ॥ १ ॥
माया आपु खड़ी भइ आगे, नैनन काजर लाये ।
नाचै गावै भाव बतावै, मोतिन माँग भराये ॥ २ ॥
रोवै माया खाय पछारा, तनिक न गाफिल पाऊँ ।
जब देखौं तब ज्ञान ध्यान में, कैसे मारि गिराऊँ ॥ ३ ॥
ऋद्धि सिद्धि दोउ कनक समाजी, बिस्नु डिगन[3] को भेजा ।
तीन लोक में अमल तुम्हारा, यह घर लगै न तेजा[4] ॥ ४ ॥
तू क्या माया मोहिं नचावै, मैं हौं बड़ा नचनियाँ ।
इहवाँ बानिक[5] लगै न तेरी, मैं हौं पलटू बनियाँ ॥ ५ ॥

(१३४)

संतो बिस्नु उठे रिसियाय, माया किन्ह जीतिया ॥ टेक ॥
माया को लिया बुलाय, गोद लै पूछन लागे ।
तीन लोक की बात, प्रगट करु मोरे आगे ॥ १ ॥
माया रोवन लागि, खोल कर मूँड़ दिखावै ।
दै जूतिन की मार, मोहिं बनिया दुरियावै ॥ २ ॥
दिहा इन्द्र को त्रास[6], अपसरा तुरत पठावो ।
नाना रूप बनाय, जाइ के तुरत डिगावो ॥ ३ ॥
उतरी अपसरा आय, अवधपुर जहँवाँ बनियाँ ।
सोरहो किये सिंगार, चंद्रमुख मधुर बचनियाँ ॥ ४ ॥

(१) ब्रह्मांड । (२) लौंड़ी । (३) फँसाने या गिराने को । (४) बल, जोर । (५) दाँव, छल बल । (६) धमकी ।

छुद्रघंटिका[1] पायल[1], बाजै रतन जड़ाऊँ ।
ऋतु बसंत की आनी, मोतिन से माँग भराऊँ ॥ ५ ॥
नाचै गावै राग, भाव धै बाँह बतावै ।
बनियाँ लाय समाधि, डिगै ना लाख डिगावै ॥ ६ ॥
क्या तुम भये फकीर, नारि तुम सुन्दर बिलसौ ।
सोना रूपा लेहु, माया को जनि तुम तरसौ ॥ ७ ॥
इन्द्र-लोक तुम लेहु, होहु बैकुंठ के राजा ।
ताको हमरी ओर, तुम्हैं हम बहुत निवाजा ॥ ८ ॥
ऋद्धि सिद्धि तुम लेहु, मुक्ति तुम लेहु अघाई ।
तीन लोक में फिरै तुही, ना आन दुहाई ॥ ९ ॥
हम सब दाबहिं गोड़, फूलन की सेज बिछाई ।
मानौ बचन हमार, तुम्हैं है राम दुहाई ॥१०॥
बनियाँ हँसा ठठाइ, पलक को नाहिं उघारी ।
तुहरे बहुत भतार, रहिउ ना तुही कुआरी ॥११॥
आगि लगै बैकुंठ, लौंड़ी है मुक्ति हमारी ।
इहाँ से होहु तू दूरि, माया तू भई अनारी ॥१२॥
हम जोगी बेकाम, खसम तुम खोजो मोटा ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस, तुम्हारे लायक ढोटा ॥१३॥
हमरे सबद बिबेक, लगहि चूतर में सोंटा ।
आबरूह[2] लै भागु, पकरि के कटिहौं झोंटा ॥१४॥
चली अपसरा हारि, जाय बैकुंठ में भागी ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस की, रहै कचहरी लागी ॥१५॥
अपसरा कहै पुकार, सुनो सत बचन हमारा ।
बनियाँ डिगै को नाहिं, उहाँ ना अमल तुम्हारा ॥१६॥
अपना चाहो भला, जाइ कै लावहु सेवा ।
उलटि देइ बैकुंठ, बचै ना सुर मुनि देवा ॥१७॥

---

(१) गहनों के नाम । (२) हुरमत ।

पलटूदास अपार, पार ना पावै कोई।
करै अपसरा सोर, देवतौ उत्रिन[1] होई ॥१८॥

(१३५)

माया ठगिनी जग बौराई ॥ टेक ॥
देवतन के घर भई अप्सरा, जोगी के घर चेली।
सुर नर मुनि सबको खाइसि है, है अलमस्त अकेली ॥ १ ॥
कृस्न कँहे गोपी है खाइसि, राम कँहै है सीता।
महादेव काँ पारबती है, तोहिं से कोऊ न जीता ॥ २ ॥
बिस्नु कँहे लछमी है खाइसि, ब्रह्मा सृष्टि पसारी।
सिंगी ऋषि को बन में खाइसि, तोहरिनि फिरै दुहाई ॥ ३ ॥
दौलत है तिरलोकै खाइसि, गुरू कहे है नारी।
पलटुदास के द्वार खड़ी रहै, लौंडी भई हमारी ॥ ४ ॥

(१३६)

माया भूत भुताना साधो, आलम[2] सब अभुवाता है ॥ टेक ॥
बूढ़ा बारा सब अभुवाता, काहू के सुधि नाहीं है।
घर घर फिरी दुहाई उसको, सब के घट में वाही है ॥ १ ॥
राजा परजा सब के लागा, सब कोऊ बौराना है।
इसके मारे सब जग मरिगा, बुढ़वा भूत सयाना है ॥ २ ॥
जोरू बेटा मुलुक खजाना, उस ही की सब छाया है।
दुइ दल होइ के हाकिम लड़ता, बकता माया माया है ॥ ३ ॥
मार के आगे भूत भी नाचै, हादी[3] ने जब दागा है।
ऐसे भूत को कौन छुड़ावै, हादी के भी लागा है ॥ ४ ॥
पलटुदास यह भूत पुराना, तीनि लोक में जागा है।
हमरे है सतगुरु के सोंटा, लै के दौरे भागा है ॥ ५ ॥

(१३७)

हम तो बेपरवाही मियाँ वे, हम को अब का चाही ॥ १ ॥

(१) पार, उद्धार। (२) संसार। (३) गुनी, स्याना।

दिल दिल्ली मन तख्त आगरा, चलै सबर दे[1] माहीं । २ ।
ज्ञान ध्यान की फौज हमारी, दफ्तर नाम इलाही । ३ ।
दुनिया दीन दोऊ है तालिब[2], ऐसी है बादसाही । ४ ।
पलटूदास दूरि भइ दूई, सादी गमी कोइ नाहीं । ५ ।

(१३८)

मुस्किल है प्यारे कठिन फकीरी रिन्दा काम । १ ।
फाका फकर सबर दिल आवै, धुनि लागी हर जाम[3] । २ ।
रूखा सूखा गम का टुकड़ा, सुबह मिलै या साम । ३ ।
हक्क हलाल आप से आवै, लेना और हराम । ४ ।
पलटूदास सोई ठहरैगा, मुद्दा हुआ तमाम । ५ ।

(१३९)

पाप के मोटरी बाम्हन भाई, इन सबही जग को बगदाई[4] ।१।
साइत सोधि के गाँव बेढ़ावैं[5], खेत चढ़ाय के मूड़ कटावैं ।२।
रास बर्ग गन मूर को गाड़ि[6], घर कै बिटिया चौके राँड़ि ।३।
और सभन को गरह बतावै, अपने गरह को नाहिं छुड़ावै ।४।
मुक्ति के हेतु इन्हें जग मानै, अपनी मुक्ति कै मरम न जानै ।५।
औरन को कहते कल्यान, दुख माँ आपु रहैं हैरान ।६।
दूध पूत औरन को देते, आप जो घर घर भिच्छा लेते ।७।
पलटुदास की बात को बूझै, अन्धा होय तेहू को सूझै ।८।

(१४०)

भलि मति हरल तुम्हार पाँड़े बम्हना ॥ टेक ॥
सब जातिन में उत्तम तुमहीं, करतब करौ कसाई ।
जीव मारि कै काया पोखौ, तनिकौ दरद न आई ॥ १ ॥
राम नाम सुनि जूड़ी आवै, पूजौ दुर्गा चंडी ।
लम्बा टीका काँध जनेऊ, बकुला जाति पखंडी ॥ २ ॥

---

(१) के । (२) याचक, मँगता । (३) घड़ी । (४) भरमाया । (५) नाश करावें । (६) राशि, वर्ग, गण और मूल (जिससे जन्मपत्री की बिधि का ज्योतिषी हिसाब करते हैं) क़ाइम करके ।

बकरी भेड़ा मछरी खायौ, काहे गाय बराई ।
रुधिर माँस सब एकै पाँड़े, थू[1] तोरी बम्हनाई ॥ ३ ॥
सब घट साहिब एकै जानौ, यहि माँ भल है तोरा ।
भगवतगीता बूझि बिचारौ, पलटु करत निहोरा ॥ ४ ॥

(१४१)

कुलुफ कुफर को खोलौ मुलने, मुरदा होय के डोलौ ॥ टेक ॥
जो तुम चाहौ भिस्त[2] आपनी, खुदी खूब को खोवौ ।
हवा हिरिस को बसि में राखौ, रूह पाक को धोवौ ॥ १ ॥
तसबी एक रहै बेदाना, दिल अंदर में फेरौ ।
पाक मुहम्मद नजर परैगा, दिल गुम्मज में हेरौ ॥ २ ॥
जाहिर चसम को दूरि करौ तुम, अन्दर धसि के पैठौ ।
असमान के बीच रखाना[3] है इक, उस हुजरे[4] में बैठौ ॥ ३ ॥
कीजै फहम फना को लै कै, नूर तजल्ली अपना ।
पलटूदास मकाँ हूहू[5] का, दीद दानिस्तन[6] सुनना ॥ ४ ॥

(१४२)

मुरसिद जात खुदाय की, दरगाह बताया ।
परवर पाक दिगार[7] को, दिल बीच मिलाया ॥ १ ॥
बंदगी दम दम की भरौं, दानिस्त[8] दिखाया ।
तिनुका ओट पहाड़ है, बिन चस्म[9] लखाया ॥ २ ॥
कुदरति देख सुभान की, दिल हौल है मेरा ।
मौजूद रहै वजूद में, बिन तसबी फेरा ॥ ३ ॥
तख्त चढ़े दुरवेस हैं, बातैं आफरीनी[10] ।
मुअज्जिज[11] हैं असमान में, औ साफा सीनी[12] ॥ ४ ॥
छत्र फिरै सिर नूर का, सब बुजरुग हारे ।
पलटुदास मिलि खाक में, हम खोजि निकारे ॥ ५ ॥

(१) धिक्कार। (२) बैकुण्ठ। (३) रखना = मोखा। (४) कोठरी। (५) वह मकान जहाँ से ओंओं की धुनि उठती है। (६) चित्त देकर। (७) पाक परवरदिगार या पालने वाला। (८) अनुभव ज्ञान। (९) आँख। (१०) प्रशंसा के योग्य। (११) प्रतिष्ठित। (१२) शुद्ध हृदय।

(१४३)

काल आय नियराना है, हरि भजो सखी री ॥ टेक ॥
सीत बात कफ घेरि लेहिंगे, करिहैं प्रान पयाना है।
तीनिउँ पन धोखे में बीते, अब क्या फिरै भुलाना है ॥ १ ॥
घाट बाट में रोकै टोकै, माँगै गुरु-परवाना है।
पलटूदास होय जब गुरुमुख, तब कुछ मिलै ठिकाना है ॥ २ ॥

(१४४)

मैं बलिहारी जाउँ जेहि मुख, हरि जस उचरै ॥ टेक ॥
जातिन नीच होय फिर कुष्टी, सरबरि[1] करै न कोई।
कोटि कुलीन होय ब्रह्मा सम, ता सम तुलै न कोई ॥ १ ॥
जेकँहै सिव सनकादिक खोजैं, सुर मुनि ध्यान लगावैं।
सो हरि उनके पीछे पीछे, संख चक्र लिये धावैं ॥ २ ॥
कोटिन तीरथ उनके चरनन, मुक्ति है उनकी चेरी।
पहुँचत हैं बैकुंठ सोई, पद-रज जै जै केरी ॥ ३ ॥
जो सुख हरि घर दुर्लभ देखा, सो उनके घर माहीं।
पलटूदास संत घर हरि हैं, हरि के घर अब नाहीं ॥ ४ ॥

(१४५)

सिर धुनि धुनि पछताउँ, देखि जग रीती हो।
बिषै लहर गै सोय माया जग जीती हो ॥ १ ॥
माया रूप जाल सकल जग बाझा[2] हो।
ज्ञानी जोगी जती परे तेहिं माँझा हो ॥ २ ॥
बूड़ैं औ उतरायँ माया के सागर हो।
कोउ नहिं सके बचाय माया नट नागर हो ॥ ३ ॥
तिरगुन फाँसी हाथ ठगिनि यह माया हो।
सुर मुनि देइ गिराय तनिक नहिं दाया हो ॥ ४ ॥
काम क्रोध की लहर सकल जग जागै हो।
चिन्ता डसै सरीर नींद नहिं लागै हो ॥ ५ ॥

---

(१) बराबरी। (२) फंसा।

चतुर सकल संसार माया महँ राचा हो ।
अहमक पलटूदास भागि कै बाचा हो ॥ ६ ॥

(१४६)

हरि चरनन चित लाओ हो सरिहैं सब काज ॥ टेक ॥
काल बली सिर ऊपर हो तीतर को बाज ।
चंगुल तर चिचिऐहौ हो जब मिलै मिजाज ॥ १ ॥
भजन बिना का तर तन हो रैयत बिनु राज ।
बिना पिता कै बालक हो रोवै बिनु साज[1] ॥ २ ॥
देव प्रित्र उपवासी[2] हो परि है जम गाज[3] ।
बहुत पुरुष कै नारी हो बिस्वै[4] नहिं लाज ॥ ३ ॥
काम क्रोध बिनु मारे हो का दैहौ सिर ताज ।
पलटुदास धिक जीवन हो सब झूठ समाज ॥ ४ ॥

(१४७)

काटौं फन्दा करम का जो होवै मेरा ।
उलटि लिखौं तेहि भाल[5] में कोइ सकै न फेरा ॥ १ ॥
जा खोजत ब्रह्मा भुले सुर मुनि बहुतेरा ।
सो पद देहौं ताहि को जिन मो को हेरा ॥ २ ॥
मरन जियन में सब परा दुख सहत घनेरा ।
करम के बसि फाँसी फँसे मुए गुरु औ चेरा ॥ ३ ॥
भरम छुड़ावौं ताहि को आवागवन निबेरा ।
सत्तलोक पहुँचाय को नहिं लावौं देरा ॥ ४ ॥
अमर लोक बैठाय के तहवाँ दौं डेरा ।
सुखी करौं तेहि जन्म को जो पलटू केरा[6] ॥ ५ ॥

(१४८)

मत कोउ गहो वह पद निरबान ॥ टेक ॥
घर के हित सब बैरी होइहैं, गुनि गुनि बेद पुरान ॥ १ ॥

---

(१) बिना ताल स्वर के । (२) उपासना या पूजा करने वाले । (३) बिजली । (४) कसबी । (५) माथा । (६) का ।

अलख नाम सोई से हित करु, राम नाम गलतान[1] । २ ।
राँध परोसिन गारी दैहैं, लोग कहैं बौरान । ३ ।
सतगुरु साहिब मिले मसूका[2], आसिक है पलटू अलगान । ४ ।

(१४९)

कौन भक्ति तोरी करौं राम मैं, कौन भक्ति तोरी करौं ।
तुझ में मैहैं तुही है मुझ में, कौन ध्यान लै धरौं ॥ १ ॥
मरौं नहीं मारे काहू के, नाहिं जराये जरौं ।
कैसन पाप पुन्न है कैसन, सरग नरक नहिं डेरौं ॥ २ ॥
तीरथ बर्त ध्यान नहिं पूजा, बिना परिस्रम तरौं ।
पलटू कहै सुनो भाइ साधो, सन्त चरन सिर धरौं ॥ ३ ॥

(१५०)

आई मुझ लैन को दूती । पिया के सेज मैं सूती ॥ १ ॥
उठी मैं नींद की माती । मिला मोहिं सेज का घाती ॥ २ ॥
कथौं क्या अकथ की कथनी । मथौं मैं तत्त की मथनी ॥ ३ ॥
अधर में चाँदनी छिटकी । सुरत की डोरि लै लटकी ॥ ४ ॥
पलटू तहँ सुनत बनि आवै । खुसी में कौन बिलगावै ॥ ५ ॥

(१५१)

मौनी मुख से बोल, मौन मनै मन रहु ॥ टेक ॥
उनमुनि मुद्रा ध्यान लगावै, मन में उलटि समावै ।
निरबिकार निरबैर जगत से, सो मौनी मोहिं भावै ॥ १ ॥
अजपा जाप जपै बिनु रसना, सुन्य में तुही अकेला ।
मौनी मन को राखु निरंतर, तुहीं गुरू तुहिं चेला ॥ २ ॥
भूख लगे पर सैन बतावै, प्यास लगे पर पानी ।
मन तरसत है बोलै कारन, कौन भक्ति तुम जानी ॥ ३ ॥
पारब्रह्म पुरुसोत्तम स्वामी, सब घट ब्यापक सोई ।
पलटू कहै सुनो हो मौनी, मौन काहि से होई ॥ ४ ॥

---

(१) मस्त । (२) प्रीतम ।

(१५२)

कोइ कोइ संत सुजान, जानै बस्तु आपनी ॥ टेक ॥
जिन जाना तिन हीं सुख पाया, और सबै हैरान ॥ १ ॥
संग्रह त्याग नहीं कुछ एको, नहीं मान अपमान ॥ २ ॥
सम्पति बिपति अस्तुती निंदा, ना कुछ लाभ न हान ॥ ३ ॥
पलटुदास खोजत सब मरिगा, परा रहै चौगान[1] ॥ ४ ॥

(१५३)

गाफिल में क्या सोवता, सुन मुरख अनारी ।
साहिब से दिल लाय ले, यह अरज हमारी ॥ १ ॥
जोरू बेटा कौन का, किस का है भाई ।
मुलुक खजाना कौन का, कोउ संग न जाई ॥ २ ॥
हाथी घोड़ा तंबुवा[2], आवै केहि कामा ।
फूलन सेज बिछावते, फिर गोर[3] मुकामा ॥ ३ ॥
आलम[4] का पातसा हुआ, तूही कुल कुल्ला ।
यह सब ख्वाब की लहर है, दरियाव का बुल्ला ॥ ४ ॥
पाव घरी में कूच है, क्या देरी लावै ।
पलटू की सतराम[5] है, तोहि काल बुलावै ॥ ५ ॥

(१५४)

मन बच कर्म भजौ करतार । भजन बिना नहिं पैहौ पार ॥१॥
नहिं मोरे मात पिता सुत नार । माया मोह झूँठ घरबार ॥२॥
ना हम केहु के कोउ न हमार । झूँठी प्रीति करै संसार ॥३॥
नर्क सर्ग नहिं वार न पार । बिनु सतगुरु कौन निस्तार ॥४॥
मन के जीते पलटू जीति । अजर जरै तो निबहै प्रीति ॥५॥

(१५५)

केहि बिधि राम नाम अनुरागै, दिल की भरम न भागै ॥ टेक ॥
बिनु खाये चित चैन न होवै, खाये आलस लागै ।
बूझि बिचारि दोऊ हम देखा, मन माया नहिं त्यागै ॥ १ ॥

(१) मैदान । (२) तंबू । (३) कबर । (४) संसार । (५) नमस्कार ।

रैयत एक पाँच ठकुराई, दस दिसि है मौआसा[1]।
रजो तमो गुन खरे सिपाही, करहिं भवन में बासा ॥ २ ॥
पाप पुन्य मिलि करहिं दिवानी, नगरी अदल न होई।
दिवस चोर घर मूसन लागे, माल-धनी गा सोई ॥ ३ ॥
इतने बैरी रहैं जीव के, उलटि पवन जब जागै।
गुरु का ज्ञान बान लै पहुँचै, ब्रह्म अगिनि दै दागै ॥ ४ ॥
काया घेरि अमल करु जोरा, धर्म द्वार मन माँगै।
पलटूदास मूल धै मारै, पुलकि पुलकि तब पागै ॥ ५ ॥

(१५६)

सबद सबद सब कहत है, क्या सबद कहाई।
केतिक ब्रह्मा लिखि गये, सो हम हीं भाई ॥ १ ॥
एक जोति बादसाह भइ, तीन्युँ लोक पसारा।
तेहि को मारि गिराइया, सिर छत्र हमारा ॥ २ ॥
बहुत समाधी सिव थके, वहँ पवन न पैसा[2]।
केतिक जुग परलै गये, तब के हम बैसा ॥ ३ ॥
चाँद सुरुज एकौ नहीं, धरती नभ साता।
राम कृस्न कोटिन मुए, कहूँ तब की बाता ॥ ४ ॥
उपजत बिनसत सब गया, बिस चारि अठैसा[3]।
सो सब पलटू देखिया, हम जैसे क तैसा ॥ ५ ॥

(१५७)

जिसी से लगन है लागी, उसी से काम है मेरा।
डरौंगी नाहिं डर जग को, हँसैगा लोग बहुतेरा ॥ १ ॥
नचन का सौक है मेरा, घुँघट को खोलि डालौंगी।
सीस लै धरौंगी आगे, सजन के मनै मानौंगी ॥ २ ॥
अधर गति खूब लाओंगी, धरौंगी ज्ञान की बाजी।
परैगा दाँव जब मेरा, सजन को करौंगी राजी ॥ ३ ॥

(१) ठग। (२) घुसा। (३) २०+४+२८=५२, अर्थात् बावन अक्षर के फेर में।

नैन भरि बदन[1] को देखा, पलटू असमान को खोला।
जान कुरबान कै सदके, सजन तब हाँसि कै बोला ॥ ४ ॥

साखी

॥ गुरुदेव ॥

संत संत सब बड़े हैं, पलटू कोऊ न छोट।
आतम-दरसी मिहीं है, और चाउर सब मोट ॥ १ ॥
पलटू ऐना[2] संत हैं, सब देखै तेहि माहिं।
टेढ़ सोझ मुँह आपना, ऐना टेढ़ा नाहिं ॥ २ ॥
वहि देवा को पूजिये, सब देवन कै देव।
पलटू चाहै भक्ति जो, सतगुरु अपना सेव ॥ ३ ॥
सतगुरु केरे सबद की, लागी मन में चोट।
पलटू रन में बचि गया, कादिर[3] ही की ओट ॥ ४ ॥
माहातम जानै नहीं, मेंड़की गंगा बीच।
पलटू सबद लगै नहीं, कतनौ रहै नगीच ॥ ५ ॥
पलटू सतगुरु सबद की, तनिक न करै बिचार।
नाव मिली केवट नहीं, कैसे उतरै पार ॥ ६ ॥

॥ नाम ॥

जप तप तीरथ बर्त है, जोगी जोग अचार।
पलटू नाम भजे बिना, कोउ न उतरै पार ॥ ७ ॥
पलटू जप तप के किहे, सरै न एकौ काज।
भवसागर के तरन को, सतगुरु नाम जहाज ॥ ८ ॥
जड़ि बूटी के खोजते, गई सुध्याई[4] खोय।
पलटू पारस नाम का, मनै रसायन होय ॥ ९ ॥

---

(१) चिहरा। (२) दर्पण। (३) समरथ। (४) शुद्धता।

॥ चितावनी ॥

पलटू यहि संसार में, कोऊ नाहीं हीत।
सोऊ बैरी होत है, जा को दीजै प्रीत ॥१०॥
पलटू नर तन पाइ कै, मूरख भजे न राम।
कोऊ ना सँग जायगा, सुत दारा धन धाम ॥११॥
बैद धनंतर मरि गया, पलटू अमर न कोय।
सुर नर मुनि जोगी जती, सबै काल बसि होय ॥१२॥
पलटू पल में कूच है, क्या लावो बड़ी देर।
अब की बार जो चूकहू, फिर चौरासी फेर ॥१३॥
बजा नगारा कूच का, लदा न एकौ ऊँट।
पलटू तलबी अस भई, तन भी गया है छूट ॥१४॥
जो दिन गया सो जान दे, मूरख अजहूँ चेत।
कहता पलटूदास है, करि लै हरि से हेत ॥१५॥
पलटू नर तन पाइ कै, भजै नहीं करतार।
जमपुर बाँधे जाहुगे, कहौं पुकार पुकार ॥१६॥
पलटू नर तन जातु है, सुन्दर सुभग सरीर।
सेवा कीजै साध की, भजि लीजै रघुबीर ॥१७॥
पलटू सिष्य जो कीजिये, लीजै बूझ बिचार।
बिन बूझे सिष करौगे, परिहै तुम पर भार ॥१८॥
दिना चारि का जीवना, का तुम करौ गुमान।
पलटू मिलिहै खाक में, घोड़ा बाज[1] निसान ॥१९॥
पलटू हरि जस गाइ ले, यही तुम्हारे साथ।
बहता पानी जातु है, धोउ सिताबी[2] हाथ ॥२०॥

॥ प्रेम ॥

राम नाम जेहि मुखन तें, पलटू होय प्रकास।
तिन के पद बंदन करौं, वो साहिब मैं दास ॥२१॥

(१) बाजा। (२) जल्द।

तन मन धन जेहि राम पर, कै दीन्हों बकसीस[1]।
पलटू तिन के चरन पर, मैं अरपत हौं सीस ॥२२॥
राम नाम जेहि उच्चरै, तेहि मुख देहुँ कपूर।
पलटू तिन के नफ़र[2] की, पनहीं का मैं धूर ॥२३॥
पलटू ऐसी प्रीति करु, ज्यों मजीठ को रंग।
टूक टूक कपड़ा उड़ै, रंग न छोड़ै संग ॥२४॥
आठ पहर जो छकि रहै, मस्त अपाने हाल।
पलटू उन से सब डरै, वो साहिब के लाल ॥२५॥
करम जनेऊ तोड़ि कै, भरम किया छयकार[3]।
जेहि गोबिंद[4] गोबिंद[5] मिले, थूक दिया संसार ॥ २६॥
पलटू सीताराम से, हम तो किहे हैं प्रीति।
देखि देखि सब जरत हैं, कौन जक्त की रीति ॥२७॥
पलटू बाजी लाइहौं, दोऊ बिधि से राम।
जो मैं हारौं राम को, जो जीतौं तौ राम[6] ॥२८॥
पलटू हम से राम से, ऐसो भा ब्यौहार।
कोउ कितनौ चुगली करै, सुनै न बात[7] हमार ॥२९॥
पलटू जस मैं राम का, वैसे राम हमार।
जा की जैसी भावना, ता से तस ब्यौहार ॥३०॥

॥ बिश्वास ॥

मनसा बाचा कर्मना, जिन को है बिस्वास।
पलटू हरि पर रहत हैं, तिन्ह के पलटू दास ॥३१॥
पलटू संसय छूटि गे, मिलिया पूरा यार।
मगन आपने ख्याल में, भाड़ पड़ै संसार ॥३२॥
ज्यों ज्यों रूठै जगत सब, मोर होय कल्यान।
पलटू बार न बाँकिहै, जो सिर पर भगवान ॥३३॥

(१) यहाँ "भेंट" का अर्थ है। (२) सेवक। (३) नाश। (४) पलटू साहिब के गुरू का नाम। (५) ईश्वर। (६) जो हारूँ तो मैं राम का हुआ और जो जीतूँ तो राम मेरे हुए। (७) शिकायत।

संत बचन जुग जुग अचल, जो आवै बिस्वास।
बिस्वास भये पर ना मिलै, तौ झूठा पलटूदास ॥३४॥
पलटू संत के बचन को, ख्याल करै ना कोइ।
टुक मन में निस्चै करै, होइ होइ पै होइ ॥३५॥
पलटू लिखा नसीब का, संत देत हैं फेर।
साच नहीं दिल आपना, ता से लागै देर ॥३६॥

॥ सूरमा ॥

धुजा फरक्कै सुन्य में, अनहद गड़ा निसान।
पलटू जूझा खेत पर, लगा जिकर[1] का बान ॥३७॥
लगा जिकर का बान है, फिकर भई छयकार।
पुरजे पुरजे उड़ि गया, पलटू जीति हमार ॥३८॥
नौबत बाजै ज्ञान की, सुन्य धुजा फहराय।
गगन निसाना मारि कै, पलटू जीते जाय ॥३९॥
बखतर पहिरे प्रेम का, घोड़ा है गुरुज्ञान।
पलटू सुरति कमान लै, जीति चले मैदान ॥४०॥
दसो दिसा मुरचा किहा, बाती दिहा लगाय।
काया गढ़ में पैसि[2] कै, पलटू लिहा छुड़ाय ॥४१॥
पलटू कफनी बाँधि कै, खींचौ सुरति कमान।
संत चढ़े मैदान पर, तरकस बाँधे ज्ञान ॥४२॥
सोई सिपाही मरद है, जग में पलटूदास।
मन मारै सिर गिरि पड़ै, तन की करै न आस ॥४३॥
सिर पर कफनी बाँधि कै, आसिक कबर खोदाव।
पलटू मेरे घर महैं, तब कोउ राखै पाँव ॥४४॥

॥ पतिब्रता ॥

जो पिव चाहै सुन्दरी, मन मैदा करु पीस।
पतिबरता पलटू भई, बेंदी झलकै सीस ॥४५॥

(१) सुमिरन। (२) धस कर।

॥ विनय ॥

तुम तजि दीनानाथ जी, करै कौन की आस।
पलटू जो दूसर करै, तो होइ दास की हाँस ॥४६॥
ना मैं किया न करि सकौं, साहिब करता मोर।
करत करावत आपु है, पलटू पलटू सोर ॥४७॥
पलटू तेरी साहिबी, जीव न पावै दुक्ख।
अदल होय बैकुंठ में, सब कोइ पावै सुक्ख ॥४८॥

॥ भक्त जन ॥

जैसे काठ में अगिन है, फूल में है ज्यों बास।
हरि जन में हरि रहत है, ऐसे पलटूदास ॥४६॥
मिंहदी में लाली रहै, दूध माहिं घिव होय।
पलटू तैसे संत हैं, हरि बिन रहैं न कोय ॥५०॥
छोड़ै जग की आस को, काम क्रोध मिटि जाय।
पलटू ऐसे दास को, देखत लोग डेराय ॥५१॥
अस्तुति निन्दा कोउ करै, लगै न तेहि के साथ।
पलटू ऐसे दास के, सब कोइ नावै माथ ॥५२॥
आठ पहर लागी रहै, भजन तेल की धार।
पलटू ऐसे दास को, कोउ न पावै पार ॥५३॥
सरबरि[१] कबहुँ न कीजिये, सब से रहिये हार।
पलटू ऐसे दास को, डेरिये बारम्बार ॥५४॥
पलटू हरिजन मिलन को, चलि जइये इक धाप।
हरि जन आये घर महैं, तो आये हरि आप[२] ॥५५॥
दुष्ट मित्र सब एक[३] हैं, ज्यों कंचन त्यों काँच।
पलटू ऐसे दास को, सुपने लगै न आँच ॥५६॥
ना जीने की खुसी है, पलटू मुए न सोच।
ना काहू से दुष्टता, ना काहू से सोच ॥५७॥

(१) बराबरी। (२) एक लिपि में "हरि आप" की जगह "हरि के आप" है। (३) समान।

काम क्रोध जिन के नहीं, लगै न भूख पियास ।
पलटू उनके दरस से, होत पाप को नास ॥५८॥
नरक सरग से जुदा है, नहीं साध असाध ।
ना जानौं मैं कौन हूँ, पलटू सहज समाध ॥५९॥

॥ साध ॥

खोजत खोजत मरि गये, तीरथ बेद पुरान ।
पलटू सूझत है नहीं, भेष में है भगवान ॥६०॥
साध परखिये रहनि में, चोर परखिये रात ।
पलटू सोना कसे में, झूठ परखिये बात ॥६१॥
बृच्छा बड़ परस्वारथी, फरै और के काज ।
भवसागर के तरन को, पलटू संत जहाज ॥६२॥
साध हमारी आतमा, हम साधन के दास ।
पलटू जो दोइति[1] करै, होय नरक में बास ॥६३॥
पलटू तीरथ को चला, बीचे मिलि गे संत ।
एक मुक्ति के खोजते, मिलि गइ मुक्ति अनन्त ॥६४॥
पलटू तीरथ के गये, बड़ा होत अपराध ।
तीरथ में फल एक है, दरस देत हैं साध ॥६५॥
जिन देखा सो बावला, को अब कहै सँदेस ।
दीन दुनी दोउ भूलिया, पलटू सो दुरवेस ॥६६॥
तड़पै बिजुली गगन में, कलस[2] जात है फूटि ।
पलटू संत के नाँव से, पाप जात है छूटि ॥६७॥
की तौ हरि चरचा महैं, की तौ रहै इकन्त ।
ऐसी रहनी जो रहै, पलटू सोई संत ॥६८॥
साधु बचन साचा सदा, जो दिल साचा होय ।
पलटू गाँठि में बाँधिये, खाली परै न कोय ॥६९॥

(१) दुभाँता । (२) घड़ा ।

टुक मन में बिस्वास करु, होय होय पै होय।
पलटू संत औ अगिन जल, छोट कहै मत कोय ॥७०॥
पलटू संत औ अगिन जल, छोट कहै मत कोय।
जो चाहैं सोई करैं, उन से सब कुछ होय ॥७१॥
पलटू चाहैं सो करैं, उन से सब कुछ होय।
राम का मिलना सहज है, संत मिला जो होय ॥७२॥
राम का मिलना सहज है, संत का मिलना दूरि।
पलटू संत के मिले बिनु, राम से परै न पूरि ॥७३॥
काम क्रोध तो है नहीं, नहीं लोभ नहिं मोह।
पलटू जो है सोई है, नहीं हेत नहिं द्रोह ॥७४॥
ज्यों फुलेल त्यों राख है, ज्यों घास त्यों पान।
पलटू संग्रह त्याग नहिं, सो जोगी परमान ॥७५॥
खोजत खोजत मरि गये, तीरथ बेद पुरान।
पलटू सूझै है नहीं, भेष महैं भगवान ॥७६॥

॥ पाखण्डी ॥

पलटू निकसे त्यागि कै, फिरि माया को ठाट।
धोबी को गदहा भयो, ना घर को ना घाट ॥७७॥
पलटू मन मूआ नहीं, चले जगत को त्याग।
ऊपर धोये का भया, जो भीतर रहि गा दाग ॥७८॥
घर छोड़ै बैराग में, फिरि घर छावै जाय।
पलटू आइ के सरन में, तनिकौ नाहिं लजाय ॥७९॥
भेष बनावै भक्त का, नाहिं राम से नेह।
पलटू पर - धन हरन को, बिस्वा[1] बेचै देह ॥८०॥
पलटू जटा रखाय सिर, तन में लाये राख।
कहत फिरैं हम जोगी, लरिका दोबे काँख ॥८१॥

(१) बेश्या, पतुरिया।

॥ सतसंग ॥

संगति ऐसी कीजिये, जहवाँ उपजै ज्ञान ।
पलटू तहाँ न बैठिये, घर की होय जियान[1] ॥८२॥
सतसंगति में जाइ कै, मन को कीजै सुद्ध ।
पलटू उहाँ न जाइये, जहवाँ उपजि कुबुद्ध ॥८३॥

॥ उपदेश ॥

पलटू गुनना छोड़ि दे, चहै जो आतम सुक्ख ।
संसय सोइ संसार है, जरा मरन को दुक्ख ॥८४॥
पलटू सीताराम से, लगी रहै वह रट्ट ।
तनिक न पलक बिसारिये, चित्त परै की पट्ट ॥८५॥
तरकस बाँधे तीन ठौ, पलटू हरि के लाग ।
इन तीनहुँ को नाम है, भक्ति ज्ञान बैराग ॥८६॥
भक्ति ज्ञान बैराग से, तीर निकारा तीन ।
पलटू इन को मारिये, इक दुनिया इक दीन ॥८७॥
लोभ मोह अहंकार तजि, काम क्रोध सब खोय ।
पलटू इतने कसर हैं, नाम हमारा होय ॥८८॥
बिना पंथ के चले से, पंथ न पूछै कोय ।
पलटू बिन साधन किहे, सिद्ध कहाँ से होय ॥८९॥
सीस नवावै संत को, सीस बखानौं सोय ।
पलटू जे सिर ना नवै, बेहतर कद्दू होय ॥९०॥
सुख के सागर राम हैं, दुख के भंजन हार ।
राम चरन तजिये नहीं, भजिये बारम्बार ॥९१॥
उदर बराबर खाइ ले, पलटू लगै न दाग ।
बासी धरै चकोर जो, पर में लागै आग ॥९२॥
पलटू पलटू क्या करै, मन को डारै धोय ।
काम क्रोध को मारि कै, सोई पलटू होय ॥९३॥

(१) हानि ।

सुनि लो पलटू भेद यह, हँसि बोले भगवान।
दुख के भीतर मुक्ति है, सुख में नरक निदान ॥६४॥
पलटू जननी से कहै, यही हमारी सीख।
सकठा[1] पुत्र न राखिये, जनमत दीजै बीख[2] ॥६५॥
पलटू संत जो कहि गये, सोई बात है ठीक।
बचन संत के नहिं टरै, ज्यों गाड़ी की लीक ॥६६॥
मन से माया त्यागि दे, चरनन लागी आय।
पलटू चेरी संत की, अंत कहाँ को जाय ॥६७॥
पंडित ज्ञानी चातुरा, इन से खेलौ दूर।
एक साच हिरदे बसै, पलटू मिलै जरूर ॥६८॥
मरते मरते सब मरे, मरै न जाना कोय।
पलटू जो जियतै मरै, सहज परायन[3] होय ॥६९॥
सब से नीचा होइ रहु, तजि बिबाद को तीर[4]।
पलटू ऐसे दास का, कोऊ न दामन-गीर[5] ॥१००॥
पलटू का घर अगम है, कोऊ न पावै पार।
जेकरे बड़ी पियास है, सिर को धरै उतार ॥१०१॥
बिन खोजे से ना मिलै, लाख करै जो कोय।
पलटू दूध से दही भा, मथिबे से घिव होय ॥१०२॥
पलटू पलक न भूलिये, इतना काम जरूर।
खामिंद कब गोहरावही, चाकर रहै हजूर ॥१०३॥
आठ पहर चौंसठ घरी, पलटू परै न भोर[6]।
का जानी केहि औसरै, साहिब ताकै मोर ॥१०४॥
पलटू सीताराम से, साची करिये प्रीति।
अपनी ओर निबाहिये, हारि परै की जीति ॥१०५॥

(१) अभक्त। (२) बिष, जहर। (३) पार। (४) निकटता, संगत। (५) पल्ला पकड़ने वाला। (६) भूल।

गारी आई एक से, पलटे भई अनेक ।
जो पलटू पलटै नहीं, रहै एक की एक ॥
जल पषान के पूजते, सरा न एको काम ।
पलटू तन करु देहरा, मन करु सालिगराम ॥
पलटू नेरे साच के, झूठे से है दूर ।
दिल में आवै साच जो, साहिब हाल हजूर ॥
पलटू यह साची कहै, अपने मन को फेर ।
तुझे पराई क्या परी, अपनी ओर निबेर ॥
कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर ।
समय पाय तरवर फरै, केतिक सींचो नीर ॥
बृच्छा फरै न आप को, नदी न अँचवै नीर ।
पर स्वारथ के कारने, संतन धरैं सरीर ॥
ज्ञान देय मूरख कँहै, पलटू करै बिबाद ।
बाँदर को आदी दिया, कछु ना कहै सवाद ॥

॥ मन ॥

मन हस्ती मन लोमड़ी, मनै काग मन सेर ।
पलटुदास साची कहै, मन के इतने फेर ॥

॥ मान ॥

बड़े बड़ाई में भुले, छोटे हैं सिरदार ।
पलटू मीठो कूप जल, समुँद पड़ा है खार ॥
सब से बड़ा समुद्र है, पानी ह्वैगा खारि ।
पलटू खारि जानि के, लीन्हों रतन निकारि ॥
पलटू यह मन अधम है, चोरों से बड़ चोर ।
गुन तजि औगुन गहतु है, तातें बड़ा कठोर ॥
कहत कहत हम मरि गये, पलटू बारम्बार ।
जग मूरख मानै नहीं, पड़ै आप से भाड़ ॥

॥ दुष्ट और कपटी ॥

पलटू मैं रोवन लगा, जरौ जगत की रीति।
जहँ देखौ तहँ कपट है, का से कीजै प्रीति॥
मुँह मीठो भीतर कपट, तहाँ न मेरो बास।
काहू से दिल ना मिलै, तौ पलटू फिरै उदास॥
पलटू पाँव न दीजिये, खोटा यह संसार।
हीताई[1] करि मिलत है, पेट महैं तरवार॥
पलटू पाँव न दीजिये, यह जग बुरी बलाय।
लिहे कतरनी काँख में, करै मित्रता धाय॥
साहिब के दरबार में, क्या झूठे का काम।
पलटू दोनों ना मिलै, कामी और अकाम॥
हिरदे में तो कुटिल है, बोलै बचन रसाल।
पलटू वह केहि काम का, ज्यों नारुन फल लाल॥
अधम अधमई ना तजै, हरदी तजै न रंग।
कहता पलटूदास है, (चहे) कोटि करै सतसंग॥
सतगुरु बपुरा क्या करै, चेला करै न होस।
पलटू भीजै मोम ना, जल को दीजै दोस॥
ज्ञान धनुष सतगुरु लिहे, सबद चलावै बान।
पलटू तिल भर ना धसै, जियतै भया पषान॥

॥ कामिनी ॥

मुए सिंह की खाल को, हस्ती देखि डेराय।
असिउ[2] बरस की बूढ़ि को, पलटू ना पतियाय॥
असिउ बरस की नारि को, पलटू ना पतियाय।
जियत निकोवै[3] तत्तु को, मुए नरक लै जाय॥
खरबूजा संसार है, नारी छूरी पैन।
पलटू पंजा सेर का, यों नारी का नैन॥

(१) मित्र बन कर। (२) अस्सी हू। (३) निचोड़ लें।

माया ठगिनी जग ठगा, इकहैं[1] ठगा न कोय।
पलटू इकहैं सो ठगै, (जो) साचा भक्त होय॥

॥ जल पाषान पूजन—तीर्थ ब्रत ॥

जल पषान बोलै नहीं, ना कछु पिवै न खाय।
पलटू पूजै संत को, सब तीरथ तरि जाय॥
सब तीरथ में खोजिया, गहरी बुड़की मार।
पलटू जल के बीच में, किन पाया करतार॥
पलटू जहँवाँ दो अमल, रैयत होय उजाड़।
इक घर में दस देवता, क्योंकर बसै बजार॥

॥ ब्राह्मन ॥

पलटू बाम्हन है बड़ा, जो सुमिरै भगवान।
बिना भजन भगवान के, बाम्हन ढेढ़[2] समान॥
सात दीप नौ खंड में, देख्यो ततु निचोय।
साध का बैरी कोइ नहीं, इक बाम्हन होय तो होय॥
सकठा बाम्हन मछखवा, ताहि न दीजै दान।
इक कुल खोवै आपनो, (दूजे) संग लिये जजमान॥
सकठा बाम्हन ना तरै, भक्ता तरै चमार।
राम भक्ति आवै नहीं, पलटू गये खुवार॥

॥ महंत ॥

पलटू कीन्हो दंडवत, वै बोले कछु नाहिं।
भगत जो बनै महंथ से, नरक परै को जाहि॥
पलटू माया पाइ कै, फूलि के भये महंथ।
मान बड़ाई में मुए, भूलि गये सत पंथ॥
गोड़ धरावैं संत से, माया के महमंत।
पलटू बिना बिबेक के, करकै गये महंत॥

(१) उसको। (२) सुअर।

॥ मिश्रित ॥

हिन्दू पूजै देवखरा, मुसलमान महजीद ।
पलटू पूजै बोलता, जो खाय दीद बरदीद ॥
पलटू अपने भेद से, कारन पैदा होय ।
जरि कै बन ह्वैगे भसम, आगि न लावै कोय ॥
चारि बरन को मेटि कै, भक्ति चलाया मूल ।
गुरु गोबिंद के बाग में, पलटू फूला फूल ॥
हद अनहद दोऊ गये, निरभय पद है गाढ़ ।
निरभय पद के बीच में, पलटू देखा ठाढ़ ॥
सुख में सेवा गुरू की, करते हैं सब कोय ।
पलटू सेवै बिपति में, गुरु-भगता है सोय ॥
पलटू मैं रोवन लगा, देखि जगत की रीति ।
नजर छिपावै संत से, बिस्वा से है प्रीति ॥
कमर बाँधि खोजन चले, पलटू फिरे उदेस[1] ।
षट दरसन सब पचि मुए, कोऊ न कहा सँदेस ॥
पलटू तेरे हाथ की, करीं परी कमान ।
जो खींचै सो गिरि परै, जोधा भीम समान ॥
सिष्य सिष्य सबही कहैं, सिष्य भया ना कोय ।
पलटू गुरु की बस्तु को, सीखै सिष तब होय ॥
ज्ञान ध्यान जानै नहीं, करते सिष्य बुलाय ।
पलटू सिष्य चमार सम, गुरुवा मेस्तर[2] आय ॥
इन्द्री जीति कारज करै, जगत सरा है भोग ।
जैसे बर्षा सिखर पर, नहीं भींजवै जोग ॥
पलटू हरि के कारने, हम तो भये फकीर ।
हरि से पंजा लाय फिर, तीनों लोक जगीर ॥

(१) अवदेश या विदेश । (२) भंगी ।

पलटू लेखे जक्त के, जोगिया गया खराब।
जोगिया जानै जग गया, दोनों देत जबाब॥
झाड़ नहीं फल खात है, नहीं कूप को प्यास।
परस्वारथ के कारने, जन्मे पलटूदास॥
खोजत गठरी लाल की, नहीं गाँठि में दाम।
लोक लाज तोड़ै नहीं, पलटू चाहै राम॥
मरनेवाला मरि गया, रोवै सो मरि जाय।
समझावै सो भी मरै, पलटू को पछिताय॥
पलटू प्रेमी नाम के, सो तो उतरे पार।
कामी क्रोधी लालची, बूड़ि मुए मँझधार॥
सिंहन के लैहड़ा किन देखा, बसुधा भरमे एक।
ऐसे संत कोइ एक हैं, और रँगे सब भेष॥
नहिं हीरा बोरन चलैं, सिंह न चलैं जमात।
ऐसे संत कोइ एक हैं, और माँग सब खात॥
पलटुदास के हाथ की, चोखी है तरवार।
जो छूए सो गिरि पड़ै, मूँठी में है धार॥
पलटू नर तन पाइकै, आवैगा केहि काम।
वहि मुख में कीड़ा परै, जो न भजै हरिनाम॥
पलटू जे कहै मरि मरौं, सो न आपने हाथ।
कहन सुनन में मन नहीं, रहनि लाज के साथ॥
मूआ है मरि जायगा, मुए के बाजी ढोल।
सुपन सनेही जग भया, सहदानी रहिगे बोल॥
पलटू जो कोइ देखै, तिस की सरना भाग।
उलटा कूप है गगन में, तिस में जरै चिराग॥
गाँसी छूटै सबद की, मूरख करै न ज्ञान।
पलटू सतगुरु क्या करैं, हिरदय भया पखान॥

॥ इति ॥

पलटू साहिब की बानी

भाग तीसरा

——: ० :——

जिसमें
उनके मनोहर शब्द और साखी
टिप्पणी सहित
छपी हैं

——: * :——

प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद

...ार] १९७९ [मूल्य ... रुपये

Printed at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By Sheel Mohan,